ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ६ अंक ६ फरवरी 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥ *(पन्ना ९३)*

सिरीरागु में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में भक्त रविदास जी मनुष्य और परमात्मा के अटूट रिश्ते की कुछ रहस्यमयी बातों का बखान कर रहे हैं। भक्त जी फरमान करते हैं कि हे परमात्मा! तुम्हारा मेरे से और मेरा आप से जो अंतर है वो कैसे है? पहली पंक्ति में किए गए प्रश्न का उत्तर दूसरी पंक्ति में देते हुए भक्त जी कहते हैं कि यह अंतर वैसा ही है जैसा अंतर सोने तथा सोने से बने कंगन में है; जल तथा जल की तरंग के मध्य है। यदि जीव पाप न करते तो हे बेअंत प्रभु! पापियों को पावन करने वाला आपका नाम 'पतित पावन' कैसे होता? कहने से तात्पर्य, जीव द्वारा किए गए पाप-कर्म को दूर कर देने के कारण ही परमात्मा का नाम 'पतित पावन' हो गया है।

भक्त रविदास जी आगे फरमान करते हैं कि हे अंतरयामी प्रभु! तुम ही हमारे मालिक हो। मालिक को देखकर उसके सेवक की पहचान हो जाती है अर्थात् मालिक (प्रभु) को जानकर उसके सेवक (दास, जीव) के बारे में पता चल जाता है। शबद की अंतिम पंक्तियों में भक्त रविदास जी का कहना है कि हे प्रभु! मेरे को यह समझ प्रदान कर; कोई संत-जन मुझे यह समझ प्रदान करे जिससे मैं इस योग्य हो जाऊं कि जब तक मेरा यह शरीर है तब तक मैं आपका नाम-सिमरन करता रहूं। कहने से तात्पर्य, जीव को जीवन भर प्रभु-सिमरन करने के लिए ही प्रभु के आगे अरदास करनी चाहिए ताकि जीव को नाम-सिमरन वाली समझ प्राप्त हो जाए। जीव को ऐसी समझ प्रदान करने वाले संत-जनों की शरण में जाना चाहिए।

शबद का भावार्थ यह है कि परमात्मा और जीव में कोई भिन्न-भेद नहीं है। वो सर्वव्यापक है, सब पापों का नाशकर्ता है। जीव परमात्मा को भुलाकर ही उसे खुद से दूर हुआ समझता है। परमात्मा की निकटता संतों-भक्तों के माध्यम से ही मिल पाती है।

. . . उपरि सचु आचारु ॥

गत दिनों देश में घटित हुई ज़ालिमाना घटनायों ने समस्त दुनिया में देश-वासियों को शर्मसार होने के लिए मज़बूर कर दिया है। यह बात हमें अच्छे से समझ लेनी चाहिए कि मेहनतकश भारतीय आज पूरी दुनिया में पहुंच चुका है। भारत में जो भी अच्छा-बुरा घटित होता है उसका असर पूरी दुनिया में बैठे भारतीयों तक पहुंचना स्वाभाविक है। देश में जगह-जगह लड़कियों के साथ हो रहे दुराचार, सरेआम लूट-खसूट, नशों आदि की तस्करी की ख़बरों से रोज़ाना अख़बारें भरने लग गयी हैं। इन अख़बारों पर विहंगम दृष्टि डालने से ही हमारे सामने वर्ष २००७ से २०११ तक की २६२० दुराचार की घटनायें अकेली राजधानी दिल्ली में ही दर्ज हुई नज़र पड़ती हैं। चेन्नई में २९३, कोलकाता में २०० ऐसी घटनाओं का ज़िक्र है। वर्ष २००२ से २०११ तक दिल्ली में दर्ज ५३५७ दुराचार के मामलों में ३८६० मामलों में दोषी साफ बरी हो गए। यहां तक कि एक संस्था द्वारा स्त्रियों के विरुद्ध बढ़ रहे अपराधों का सर्वे करने के उपरांत भारत की दशा को जी-२० मुल्कों में से सबसे ज्यादा गंभीर एलाना गया है।

ऐसिहासिक घटनायों पर दृष्टि डालते हुए पता चलता है कि स्त्री प्राचीन काल से ही जुल्म का शिकार होती आई है। जंगों-युद्धों में स्त्रियों को लूट के सामान की भांति लूटकर उन पर अपना अधिकार जताया जाता तथा मंडियां लगाकर पशुओं की तरह ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करके इनका क्रय-विक्रय किया जाता था। श्री गुरु नानक देव जी ने बाबर के हमले के दौरान हुई स्त्रियों की ऐसी दुर्दशा को देखते हुए बाबर को जाबिर होने का खिताब भी दिया। अगले गुरु साहिबान ने स्त्रियों की महानता को समझते हुए समाज में उन्हें हर तरह से समानता देने के यत्न किए। गुलामी के चिन्ह परदे एवं सती-प्रथा से उन्हें निज़ात दिलायी। गुरु साहिब की इस प्रेरणा सदका माता भाग कौर शूरवीरों की भांति जालिमों के विरुद्ध तेग लहराकर जंग-ए-मैदान में कूदी, जिस कारण उसे प्रथम सिक्ख महिला जरनैल होने का गर्व प्राप्त हुआ। मुगलों के शासन-काल में जंगल-बेलों में छिपकर जीवन बसर कर रहे शूरवीर सिंघ रात को १२ बजे जागकर, अपनी जानों पर खेलकर अहमद शाह अब्दाली जैसे ज़ालिम पुरुष की कैद में से स्त्रियों को छुड़ाकर उनके घर पहुंचाया करते थे। यहां से ही सिंघों की १२ बजे वाली कहावत शुरू हुई थी।

ऐसी ही घटनायों में से एक बार सिंघों के एक जत्थे ने गोइंदवाल साहिब के पास अहमद शाह अब्दाली की फौज पर हमला करके उसकी कैद में से स्त्रियों को छुड़ा लिया। इन स्त्रियों के लिए कैंप ब्यास दरिया के किनारे बाबा बकाला साहिब में लगा दिया। यहां से ही इनके घर-बार का पता लगाकर इनको घर-घर पहुंचाने का प्रबंध किया गया। जितने दिन तक ये स्त्रियां यहां रहीं, गुरबाणी-कीर्तन का प्रवाह चलता रहा। बहादुर सिंघों के साथ इनका अपने सगे भाइयों से भी ज्यादा स्नेह हो गया। इन्होंने यहां से अपने इन मुंह-बोले भाइयों से बिछुड़ते समय इन्हें

साल में एक बार मिलने की इच्छा प्रकट की। सारी सोच-विचार करने के बाद रक्षा-पूर्णिमा का दिन निश्चित कर लिया गया। ये धर्मी बहन-भाई जहां भी होते, रक्षा-पूर्णिमा के अवसर पर बाबा बकाला साहिब में इकट्ठे होकर गुरबाणी-कीर्तन करते। भारी इकट्ठ हो जाने के कारण यह जोड़-मेले का रूप धारण कर जाता था। आज भी बाबा बकाला साहिब में रक्षा-पूर्णिमा के दिन भारी जोड़-मेला लगता है। ऐसी घटनाओं के कारण सिंघों की शूरवीरता एवं स्त्रियों के प्रति सम्मान की मिसालें दूर-दूर तक फैल गयीं। सिंघों के चलते दल निहंग सिंघों के जत्थे जिस भी गांव में जाते वहीं इनके सत्कार के लिए सारे गांववासी इकट्ठे होकर इन्हें लेने आते। इन्हीं दिनों में बहादुर सिंघों के बारे में यह कहावत आम प्रचलित हो गयी :

आए ने निहंग, कुंडा खोल दे निशंग ।

मगर आज हम गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी शिक्षा को भुलाकर दुनिया की चमक-दमक के पीछे लगकर अपने बहुमूल्य जीवन-मूल्य को नर्क बनाए जा रहे हैं, अपने बच्चे-बच्चियों का जीवन बर्बाद कर रहे हैं। उपरोक्त सारे घटनाक्रम को देखते हुए महसूस होता है कि जो प्राणी जुल्म कर रहा है, अकेला वही जिम्मेदार नहीं बल्कि इसके पीछे वे सब जिम्मेदार हैं जो समाज को सही दिशा देने के लिए जिम्मेदार थे, मगर वे अपनी जिम्मेदारी भूलकर आंख-कान बंद किए बैठे हैं। इसमें हमारे अनमोल सभ्याचार के तथाकथित ठेकेदार, गायक, राजनीतिज्ञ, शिक्षादानी, मीडिया आदि सब बराबर के जिम्मेदार हैं। सबसे ज्यादा जिम्मेदार आम आदमी है, जिसने जब इन साजिशों को जन्म दिया जा रहा था, इनका विरोध नहीं किया, बल्कि दूसरे के घर लगी आग को बैसंतर समझकर ठहाके लगाए। नवंबर, १९८४ ई में एक स्त्री प्रधानमंत्री के कत्ल के बाद जब देश के लीडरों की शह पर एक विशेष वर्ग की औरतों पर धक्केशाही तथा तशद्दद किया जा रहा था, तो देश भर की औरतों द्वारा इसके विरुद्ध आवाज़ क्यों न बुलंद की गयी? इन घटनाओं के दोषी आज तक सरेआम घूम रहे हैं। इनको सज़ा दिलाने के लिए देश भर की स्त्रियों को आवाज़ बुलंद करनी चाहिए?

स्त्रियों की रक्षा करने वाले दसतारधारी सिंघों को दुनिया भर में बदनाम करने हेतु हमारे गायक वर्ग ने भी कोई कसर शेष नहीं छोड़ी। जिन दसतारधारियों की चर्चा "आए ने निहंग, कुंडा खोल दे निसंग" कहकर की जाती थी उनको हमारे भुलक्कड़ गायक भाइयों ने "रहीं बच के नी रंगले दुपट्टे वालीए, आ गए पगां पोचवीआं वाले" कहकर सारी दुनिया में प्रचारित करना शुरू कर दिया। इनको हमारे मीडिया ने दूर-दूर तक पहुंचाने में कोई कसर शेष नहीं छोड़ी। हम भी पीछे नहीं रहे ऐसे गायकों को लखपति, करोड़पति बनाने में। कहां थी हमारी बुद्धि जब हमारी बदनामी तथा चरित्र की गिरावट के ऐसे बीज बोए जा रहे थे? क्यों नहीं हमने विरोध किया? क्यों नहीं कोई भाई गरजा सिंघ, भाई बोता सिंघ का वारिस उठा जो बताता कि ज़मीर वाले अभी ज़िंदा हैं?

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा! 'देर आए दुरुस्त आए।' आओ संभलें! अपने असली सभ्याचार को पहचानकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं के लड़ लगें और बच्चों को भी लगाएं ताकि गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी पवित्र विचारधारा के आधार पर 'बेगम पुरा' की सृजना कर अपने बच्चों तथा अपने लिए अच्छा समाज सृजित कर सकें।

भक्त रविदास जी : बाणी और विचारधारा

-डॉ. मधु बाला*

प्रेम और वैराग्य की मूर्ति भक्त रविदास जी की बाणी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान प्राप्त करना ही उनकी बाणी की महत्ता को दर्शाता है। इन्हें मीरा के मार्गदर्शक, भक्त कबीर जी के समकालीन और भक्त धंना जी एवं भक्त पीपा जी के संगी माना जाता है। इनका सम्बंध भक्त रामानंद जी की शिष्य-परंपरा से रहा। संत-महात्माओं में पाए जाने वाले सभी गुण, जैसे सरलता, सहजता, कोमल-हृदय, संतोष, निरअहंकार आदि इनमें विद्यमान थे। वे निराकार, निर्गुण प्रभु के उपासक थे। इनकी अधिकतर हस्तलिखित रचनाएं राजस्थान में मिलती हैं। 'भक्त रविदास जी की बाणी' शीर्षक के अंतर्गत बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित इनकी रचनाओं का संग्रह भी मिलता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके द्वारा रचित बाणी-- ४० शबद दर्ज हैं तथा यही इनकी बाणी प्रमाणित मानी जाती है। इनकी बाणी में फारसी शब्दों का प्रयोग इस बात को दर्शाता है कि उस समय तक फारसी भाषा को राज-सम्मान प्राप्त हो चुका था। साधना के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्दों का प्रयोग इनकी बाणी में भी हुआ है, जैसे कि सुरति-निरति, इंगला-पिंगला, सहज-सुन्न आदि। इनकी लोक प्रचलित बाणी की सबसे अधिक विशेषता यह है कि न तो इसमें ज्ञान के आडंबर का प्रकटावा है और न ही शैली की दुरूहता और वक्रता। इनकी बाणी केवल प्रभु के प्रति आत्म-समर्पण का भाव रखती है :

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥
सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥

(पन्ना ८७५)

ऐसे निश्छल विचारों का सहज प्रवाह आज प्रत्येक के मन में समाया हुआ है। इनकी बाणी के अनुसार आत्मा और परमात्मा की एकाकारता में किंचित भी भेद नहीं है। जब आत्मा परमात्मा का अंश है तो वो भिन्न हो ही नहीं सकती। एक पूर्ण वस्तु से यदि कोई उसका हिस्सा पृथक कर देता है तो उसके गुणों में अंतर नहीं आ सकता। वृक्ष से टूटी हुई लकड़ी भले ही वृक्ष नहीं कहला सकती, परंतु उसमें लकड़ी से सभी तत्व मौजूद रहते हैं। जीव और प्रभु में जो साधारण मनुष्य का अंतर दिखाई देता है वो है सोना और उससे बने गहने तथा पानी और लहर। जैसे सोने को ढालकर गहने बनते हैं और गहनों से फिर सोना; जैसे पानी की लहरों को जल से पृथक नहीं किया जा सकता, उसी तरह भले ही जीव और प्रभु अलग दिखाई देते हैं परंतु आत्मिक दृष्टि से ये दोनों एक ही हैं :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥

*आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्क्लेव, पटियाला-१४७००५, फोन ९९१४१-९०७२४

जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥ (पन्ना ९३)

अति सरल शब्दों में पतित-पावन की व्याख्या करते हुए लिखा है कि यदि जीव पतित है तभी तो उनका उद्धार करने वाले आप (प्रभु) पतित-पावन बने। यदि जीव में दासत्व का भाव है तभी परमात्मा स्वामी है। स्वामी है, तभी दास है। यदि दास न हो तो स्वामी किसका बना जाए? भक्त रविदास जी कहते हैं कि मेरा शरीर जब तक रहे मैं आपकी पूजा-आराधना करता रहूं।

भक्त रविदास जी का आत्मनिवेदन भले ही सरल है परंतु यह सरलता मनुष्य को एक संदेश देती है कि मनुष्य को वह अवस्था स्वीकार कर लेनी चाहिए, जिसमें वह जीवन जी रहा है। यदि वह ऊंचे कुल से सम्बंधित नहीं है तथापि उसे भक्ति का पूर्ण अधिकार है। मनुष्य की जात-पात परमात्मा ने नहीं बनाई। जिस अवस्था में हमारा जीवन चल रहा है वह भी परमात्मा से छिपी हुई नहीं है। मनुष्य को अपनी सत्ता का एहसास होना चाहिए। उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है :

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न विसारहु मै जनु तेरा ॥
(पन्ना ३४५)

हे परमात्मा! मेरा जन्म, कर्म, जात-पात, संगत सब कुछ नीच है, परंतु फिर भी मेरी विनती है कि मेरे कष्ट दूर करके मुझे पवित्र आत्मा वाला बना दो। आत्मिक अवस्था का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं कि जिस आत्मिक अवस्था रूपी शहर में मैं बसता हूं उस शहर का नाम 'बेगम पुरा' है। 'बेगम पुरा'-- जहां कोई दुख-संताप नहीं है। न चिंता है, न घबराहट। न ही कोई दुनियावी दौलत है जिस पर टैक्स चुकाना पड़ता है। पाप-कर्मों का कोई भय नहीं है, क्योंकि पाप-पुण्य संसारी बातें हैं। जिसे प्रभु का प्रेम मिल जाए वह पाप कर ही नहीं सकता। उस जीवन-संसार में मनुष्य को अपने आचरण, चरित्र, धर्म अथवा किसी भी कारण से गिरावट का कोई खतरा नहीं है। उस जीवन-संसार रूपी शहर का नाम भक्त रविदास जी ने 'बेगम पुरा' रखा है। यह परमात्मा का घर है, जहां परमात्मा हर पल निवास करता है। यह शहर बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि इसके बारे में हर कोई जानता है। इस शहर में अनेक प्रकार के सुख हैं। यहां न कोई छोटा है न कोई बड़ा, सब एक समान हैं। भेदभाव के लिए यहां कोई जगह नहीं है। आत्मिक शहर में रहने वाला आनंदपूर्वक विचरण करता है। वे मनुष्य ईश्वर के महल से भली-भांति परिचित हो जाते हैं। उनके लिए कहीं भी जाना सरल है। उनका रास्ता रोकने वाला कोई नहीं है। परंतु प्रश्न है कि उस महल में लेकर कौन जाए? भक्त रविदास जी मानते हैं कि सतसंगी मित्र ही हमें वहां तक ले जाने में समर्थ हो सकता है :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दुखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ . . .
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥ (पन्ना ३४५)

नाम के व्यापारी श्री गुरु नानक देव जी को जब व्यापार के लिए भेजा था तब वे केवल सच्चे सौदे के व्यापारी बने। नाम-सिमरन,

प्रभु-भक्ति का व्यापार सबसे कठिन है। इन दुर्गम रास्तों पर चलना कठिन है। मन की तुलना बैल से की है जो नाम रूपी सौदे को ले जाने वाला है। यदि बैल ही रोगी, बूढ़ा और नास्तिक होगा, मैला कुचित्त और मनमौजी होगा फिर वह मनुष्य के सच्चे, साफ और भारी सौदे को परमात्मा के महल तक कैसे पहुंचा सकेगा? दुर्गम मार्ग पर परमात्मा ही मनुष्य को आश्रय देता है। प्रभु-नाम का व्यापारी ही हमारा माल लेकर जा सकता है :

को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥रहाउ॥
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
(पन्ना ३४५)

संसार के रंग और परमात्मा के रंगों में अंतर करते हुए भक्त रविदास जी फरमान करते हैं कि जो मनुष्य परमात्मा के रंग में रंगा हुआ है उसे संसार के रंग अच्छे नहीं लगते। संसार का रंग तो कुसुंभड़े के समान है और प्रभु का रंग मजीठ जैसा है। कुसुंभड़े का वर्णन संस्कृत में मिलता है। कुसुंभड़े का फूल लाल शोख़ रंग का होता है जो पानी और धूप से फीका पड़ जाता है। भक्त रविदास जी प्रकारान्त से स्पष्ट करना चाहते हैं कि दुनियावी रंग देखने में सुंदर, आकर्षक एवं लुभावने होते हैं, जैसे कि कुसुंभड़े का फूल, जिसे जीवन के संघर्ष की धूप और कठिनाइयों का जल फीका बना देता है। दूसरी तरफ उन्होंने ब्रह्म के प्रेम की तुलना मजीठ के रंग से की है। मजीठ एक ऐसी बेल है जिसमें से लाल रंग निकलता है। दोनों रंग की समानता है, परंतु कुसुंभड़े का रंग पल भर का है, समाप्त होने वाला है, जबकि मजीठ का रंग कभी फीका नहीं पड़ता। मनुष्य को वही रंग अपनाना चाहिए जिसकी रंगत सदा के लिए हो। संसार के रंगों की अपेक्षा प्रभु के रंग कहीं अधिक सुंदर और तन-मन को रंगने वाले हैं। जीवन की विपरीत परिस्थितियां इन रंगों को फीका नहीं कर सकती।

भक्त रविदास जी ने माया, विकार और दुविधा को ऐसे तत्व माना है जिनमें मनुष्य हमेशा ही उलझा रहता है। माया में भ्रमित मनुष्य की तुलना उन्होंने कूप-मंडूक अर्थात् कुएं के मेंढक से की है। जैसे कुएं के मेंढक कुएं में ही पैदा होते हैं और कुएं में ही अपना जीवन समाप्त कर देते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी संसार रूपी समुद्र का मेंढक है। वह संसार में पैदा होकर मोह के चक्कर में पड़कर जीवन का अंत कर देता है। कई लाख योनियां भुगतने के बाद मनुष्य-योनि मिलती है। यदि इस जीवन में भी कोई उपाय न किया गया तो पुनः जन्म-मरण का सिलसिला शुरू हो जाएगा। ज्ञान-प्राप्ति से जीवन संवरता है। जो मनुष्य सांसारिक पदार्थों के उपभोग में ही जीवन की सार्थकता समझते हैं वे अपने परलोक जाने के मार्ग में स्वयं ही कांटे बोते हैं। भक्त कबीर जी ने भी माया को महा ठगिनी कहा है और सूफी संतों ने इसे शैतान का नाम दिया है, जो कि परमात्मा को मिलने के राह में बाधक बनती है।

भक्त रविदास जी ने विकारों को दूर करने पर भी ज़ोर दिया है। मुख्य रूप से पांच विकार माने गए हैं-- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनमें से तो एक अकेला विकार ही मनुष्य को नष्ट करने वाला है और जिस मनुष्य में इन सबका निवास हो उसकी रक्षा करने में भला कौन समर्थ हो सकता है! विकारों से दूर रहने के लिए एक ऐसे सद्गुरु की आवश्यकता है जो मनुष्य की ज्ञान रूपी आंखें खोल देता है। मन यदि प्रभु में रम जाता है

तो उस मनुष्य की सारी मुसीबतें, दुख दूर हो जाते हैं। विकारों के विषय में अधिकतर मनुष्य जानकारी रखते हैं। उनमें से कुछ उन्हें दूर करना चाहते हैं और कुछ उन्हें दूर करने में समर्थ भी हो जाते हैं। कुछ लोग परमात्मा की सत्ता को मन से स्वीकार नहीं करते। जो सम्पूर्ण संसार का दाता है उसे हमारे दिए गए धन-वस्त्रों से क्या प्रयोजन? यह सब परमात्मा द्वारा प्रदत्त ही है। प्रभु निराकार है, अशरीरी है। उसको सांसारिक पदार्थों की आवश्यकता नहीं है। वह तो केवल भक्ति और भावना का ही इच्छुक है। पूजा-सामग्री एकत्र करना और सामर्थ्य अनुसार प्रभु को अर्पण करना केवल भक्त के मन को सुख देता है। बिना श्रद्धा-भाव के अर्पित इन पदार्थों का कोई मूल्य नहीं है।

भक्त रविदास जी ने प्रत्येक युग का कोई न कोई उपाय बताया है जो मनुष्य को सही मार्ग दर्शाता है। प्रभु-नाम-सिमरन से संसार रूपी समुद्र को पार किया जा सकता है। यह ठीक है कि हर कार्य के लिए नियम बना लिए गए, प्रकृति भी नियमाधीन है। शास्त्रों को पढ़ने-समझने का भी नियम है। प्रत्येक क्षेत्र को पढ़ने-समझने की सीमा निर्धारित की गई है, परंतु अभी तक उस कर्म की चर्चा नहीं मिलती जो जीवन-मरण के बंधन से मुक्ति दिला सके। उस प्रभु को पाकर हम आवागमन के चक्कर से छूट जाएं। शास्त्रों में बहुत-सा ज्ञान-भंडार है, लेकिन मनुष्य को हमेशा डर लगा रहता है कि कौन-सा कर्म ठीक है और कौन-सा गलत। जीवन की अवधि कम है। यह संभव नहीं है कि वह सभी ग्रंथों को पढ़े। यदि पढ़ भी लिए जाएं तो संभवत: उसके पास इतनी आयु ही शेष न रहे कि वह उस अर्जित ज्ञान का उपयोग कर सके, क्योंकि ज्ञान-प्राप्ति हो अथवा न हो, आयु किसी भी पल, किसी भी पड़ाव पर नहीं रुकती, निरंतर गतिशील है। जीवन के अधिकतर अनुभव पढ़ने-सुनने से नहीं अपितु जीवन की उस अवस्था में से गुज़रने के बाद ही महसूस किए जाते हैं।

ज्ञान दो प्रकार का होता है-- अंदरूनी और बाहरी। अंदरूनी ज्ञान की सूक्ष्मता बहुत विलक्षण होती है, क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति का निजी अनुभव होता है। उसके लिए किसी पाठशाला, किसी ग्रंथ की आवश्यकता नहीं होती। यह ज्ञान आत्मविश्लेषण पर आधारित होता है, बाहरी ज्ञान सांसारिक व्यवहार हेतु होता है। यदि संत जीवन के विषय में विचार किया जाए तो पता चलता है कि उन्होंने ग्रंथों की अपेक्षा जीवन और लोक-व्यवहार से अधिक शिक्षा प्राप्त की और उस पर अमल करते हुए आगामी पीढ़ियों के लिए सरल मार्ग की रचना की। आज श्री गुरु नानक देव जी, भक्त कबीर जी, भक्त सूरदास जी आदि प्रसिद्ध संतों एवं भक्तों की बाणी ने न जाने कितने नए ग्रंथों का निर्माण कर दिया। शोध-प्रबंधों की रचना हुई। अनगिनत सेमिनार, भाषण-प्रतियोगिताएं करवाई जाती हैं और असंख्य विद्वानों ने उन संतों की बाणी की प्रत्येक पंक्ति पर अपने विचार प्रकट करते हुए उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। प्रत्येक व्यक्ति का कार्य महत्त्वपूर्ण है। उसमें नवीनता भी है, वह प्रशंसनीय भी है, परंतु भक्त साहिबान की अपनी बाणी में जो गागर में सागर समाया हुआ है उसकी खूबसूरती, संक्षेपता और प्रस्तुतीकरण का वह सरल ढंग कोई भी नवीन रचना नहीं ले सकती। जात-पात में भेदभाव न रखने की बात यदि कोई व्यक्ति, कोई संस्था करती है तो उसे आधुनिक युग का समाज-सुधारक माना जाता है, उसको

सम्मानित किया जाता है; लोगों द्वारा उसे आदरणीय माना जाता है। हर व्यक्ति अपने प्राचीन साहित्य से परिचित होना चाहिए और उसे इस बात का ज्ञान हो जाए कि आडंबर रहित जीवन व्यतीत करने वाले, आडंबरों का विरोध करने वाले, मूर्ति-पूजा का खंडन करने वाले, कर्मकांड की अपेक्षा मन की शुद्धता पर बल देने वाले हमारे ही भक्तिकालीन संत-गुरु रहे हैं, जिन्होंने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व इनका प्रचार-प्रसार किया, लेकिन यह हमारी ही कमज़ोरी है कि जो राह उन्होंने हमें दिखाई उस पर अग्रसर होने में हमने ही देर कर दी। जिन्होंने इन विचारों को जीवन में अपनाया उनकी संख्या अत्यल्प है। ये सदुपदेश ग्रंथों का अथवा पाठ्यक्रम का विषय ही न बने रहें, अपितु हमें इनका उपयोग जीवन में करते हुए जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। बाणी पढ़ने के साथ-साथ उसको जीवन का अंग भी बनाना चाहिए।

आपका पत्र मिला

गुरमति ज्ञान : मानव-कल्याण का स्रोत

'गुरमति ज्ञान' का दिसंबर, २०१२ 'बाल-संभाल विशेषांक' सुलभ हुआ। बालकों के कल्याण के लिए और उनके उत्थान के लिए आपने विविध विद्वानों द्वारा लेख लिखवाकर विशेषांक प्रकाशित किया है, वो प्रशंसनीय है।

'गुरमति ज्ञान' मासिक केवल धर्म-विषयक स्तर पर न रहते हुए मानव-कल्याण की बुनियाद पर भी कदम रखता है, जो अनुप्रेरणीय है। पुन: आपके प्रयास को अभिनंदन। मानव-कल्याण के स्रोत ऐसे विशेषांक प्रकाशित होते रहें, ऐसी शुभेच्छा और ख़्वाहिश है।

--मनहर प्रसाद भावसार,
अहमदाबाद।

हर अंक-- विशेष अंक

'गुरमति ज्ञान' दिसंबर, २०१२ की जितनी प्रशंसा की जाये कम होगी। 'बाल-संभाल विशेष अंक' संभालकर रखने, पढ़ने और पढ़वाने वाला है। यह अंक अपने आप में विशेष लाभप्रद है, सभी लेखकों को मेरी तरफ से धन्यवाद! सभी लेखकों ने अपनी-अपनी कलम चलाकर संगत का बड़ा कल्याण किया है। लेख बार-बार, पुन:-पुन: पढ़ने पर भी जी नहीं उकताता।

डॉ अंजुमन एवं स. सुरजीत सिंघ ने सेलफोनों, सेलटावरों, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों सम्बंधी लिखकर बालकों, माता-पिता और समाज के हर वर्ग को सतर्क कर दिया है। उन्होंने विस्तृत जानकारी देकर चेतावनी दी है और सावधानियां भी सुझाई हैं। सब लेखकों को मेरा विशेष सत्कार और धन्यवाद। 'गुरमति ज्ञान' के सभी अंक अपने आप में विशेष अंक हैं; संभालकर, जिल्द चढ़वाकर रखने वाले हैं।

--कृष्ण चंद्र दरगन,
समस्तीपुर।

भक्त रविदास जी की बाणी-- ज्ञान की गंगा, प्रेम का पानी

-सुश्री प्रवीण बाला*

भारतवर्ष की भूमि सदैव से आध्यात्मिक किरणों द्वारा महिमामंडित रही है। युग की धाराओं ने इस भूमि पर बहुत से वार किए, भौतिक क्षति भी पहुंचाई, पर अपने अध्यात्म के बल पर यह धरती पुनः-पुनः समृद्ध होती गई। इस अध्यात्म को पोषित करने वाले यहां के पीर, पैगंबर, संत तथा भक्त रहे हैं, जिन्होंने अपनी सकारात्मक ऊर्जा के द्वारा सदैव इसे महिमामंडित बनाए रखा है। इन्हीं संतों, भक्तों में एक नाम भक्त रविदास जी का भी आता है, जिन्होंने सूर्य के सदृश ज्ञान और प्रेम की किरणें इस धरा पर बिखेरीं। भक्त रविदास जी का नाम इतना उल्लेखनीय न रहता यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनकी बाणी को स्थान न दिया जाता। यूं तो संतों और भक्तों की महिमा किसी वर्णन की मोहताज नहीं होती, पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसे पवित्र ग्रंथ में इनकी बाणी का आकर जुड़ना उसे जन-जन तक पहुंचाने का साधन बनता है। सिक्खों के पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त रविदास जी की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित कर उसे उत्तम स्थान दिया। उनके बारे में श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥
(पन्ना ४८७)

भक्त रविदास जी तथाकथित चमार जाति से सम्बंधित थे। अपने जीवन-काल में जूते गांठने-बनाने (मोची) का काम करते हुए उन्होंने अपने प्रेम और भक्ति के कारण ईश्वर को प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि ईश्वर त्याग से नहीं, बल्कि भीतरी ज्ञान से, प्रेम के व्यवहार से मिलता है। तथाकथित नीच जाति के लोगों को तब जो स्थान प्राप्त था, उसे सभी जानते हैं, परंतु ईश्वर की राह पर चलने वाले भक्त रविदास जी समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर गए :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥
(पन्ना ४८६)

एरंड (इरंड) का सुगंधहीन पौधा सुगंधित चंदन की संगत से स्वयं भी सुगंधित हो जाता है, इसलिए भक्त रविदास जी स्वयं को सुगंधहीन एरंड और प्रभु को चंदन मानते हुए यह जताते हैं कि उनके निकट महक के कारण ही वे निकृष्ट पौधे से ऊंचे पौधे अर्थात् चंदन के समान बन गए हैं। नीचे से ऊंचा स्थान देने वाला केवल वही परमात्मा है। जगत जिसे नीच मानता है, ईश्वर की शरण से वही व्यक्ति सिर पर छत्र धारण करने वाला बन जाता है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

भक्त रविदास जी उसी हरि का सिमरन करने को कहते हैं, जो ऊंच-नीच का भेद किए बिना सबको समान मुक्ति देने वाला है :

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥

*लेक्चरर, हिंदी विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२

ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥
(पन्ना ८५८)

भक्त रविदास जी को वैराग्य था, भीतरी ज्ञान था और यह ज्ञान प्रभु-प्रेम से और भी पक गया था। प्रेम में एक सम्बंध होता है और जहां सम्बंध होता है, भक्ति वहीं होती है। भक्ति का आधार ही सम्बंध है। भक्त रविदास जी भक्ति करते थे उस माधव की जो सृष्टि के कण-कण में है, परंतु अज्ञानतावश जीव उसको भूला बैठा है और इस प्रक्रिया में कई जन्म बीत गए हैं। भक्त रविदास जी माधव के संग अपनी प्रीति को, उसके दर्शन की इच्छा को इस तरह व्यक्त करते हैं :

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ (पन्ना ६९४)

अपने माधव से वे ऐसी प्रीति रखना चाहते हैं जो सच्ची हो। ऐसी प्रीति जुड़ जाए तो फिर कहना ही क्या! प्रेमा-भक्ति में लगे भक्त रविदास जी ऐसे प्रभु से प्रीति तोड़कर अन्य किसी से जोड़ने की इच्छा नहीं रखते :

माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥
(पन्ना ६५८)

प्रभु-भक्ति की प्राप्ति हेतु ही भक्त रविदास जी प्रभु का गुणगान करते हैं, अन्य कोई भी चीज़ उन्हें अभीष्ट नहीं :

तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥ (पन्ना ६५९)

भक्त रविदास जी आत्मा और परमात्मा को एक ही मानते हैं, दो होने का भ्रम केवल अज्ञान है। जब ईश्वरीय कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है तो यह बात समझ में आ जाती है :

- तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)
-जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥ (पन्ना ६५७)

भक्त रविदास जी ने ऐसी ऊंची प्रभु-प्रीति करके दिखाई, जिसने उन्हें संतों-भक्तों में ऊंचा बना दिया। उन्होंने ज्ञान की ऐसी क्रांति बिखेरी कि झूठी देह का भ्रम जाता रहा। ऊंच हो या नीच, मृत होने पर सब का घर से निकाला होता है। अमीरी का यह भांडा देह से प्राण छूटते ही फूट जाता है :

ऊचे मंदर साल रसोई ॥
एक घरी फुनि रहनु न होई ॥
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥रहाउ॥
भाई बंध कुटंब सहेरा ॥
ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥
घरि की नारि उरहि तन लागी ॥
उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ (पन्ना ७९४)

ऐसे स्वार्थमय संसार की सच्चाई आगे रखकर उन्होंने हरि से विमुख रहने के परिणाम को सामने रखकर जीव को सुचेत किया :

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥
(पन्ना १३७७)

भक्त रविदास जी की वैराग्यमयी बाणी, प्रेमासिक्त भक्ति तथा ईश्वरीय अनुराग का ही परिणाम था कि ज्ञान के अंजन में सब कालिमाओं को आंज दिया। रानी झालीबाई से लेकर मीरा जैसी प्रेम-वियोगिनी भी घट-घट में प्रभु की महिमा से भिज्ञ हुई और प्रभु-नाम के हीरे की धारणी बन बैठी। जिसकी बाणी ने लोगों को प्रेम का, भक्ति का, ज्ञान का और वैराग्य का एक साथ पाठ पढ़ा दिया, ऐसे भक्त रविदास जी और उनकी बाणी को शत्-शत् नमन है।

भक्त रविदास जी की बाणी : सामाजिक चेतना के संदर्भ में

*-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

भक्त रविदास जी चौदहवीं सदी में पैदा हुए महान पुरुष हुए हैं। उनका जन्म १३७६ ई. में तथाकथित चमार जाति में हुआ। उनको ब्राह्मणों के जाति-अभिमान का कठोर सामना करना पड़ा। चमार जाति उस समय के माने जाने वाले चार वर्णों में से अंतिम वर्ण शूद्र से सम्बंधित मानी जाती थी। यह वो समय था, जब शूद्र वर्ण से सम्बंधित लोगों को अछूत, मलेश और अपवित्र कहकर सामाजिक और धार्मिक अधिकारों से वंचित कर दिया जाता था। भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक दशा बिगड़ चुकी थी। धर्म फोकट के कर्मकांडों में फंस चुका था। समाज में जात-पात, छुआ-छूत का बोलबाला शिखर पर था। राज्य-सत्ता में से न्याय की कमी साफ झलकने लगी थी। अन्याय तथा धक्केशाही की प्रधानता थी। मुगल अपने धर्म के फैलाव के लिए हर अच्छा-बुरा तरीका अपना रहे थे। हिंदुओं को सिर्फ जजिया ही नहीं बल्कि तीर्थ-स्थानों पर जाने के लिए कर भी देना पड़ता था। ऐसे अंधकार के समय भक्त रविदास जी ने मानवता में धार्मिक व सामाजिक समानता के साथ-साथ लोक-चेतना पैदा की। जहां भक्त रविदास जी ने राजनीतिक संदर्भ में बादशाह और धार्मिक-सामाजिक संदर्भ में पुरोहित वर्ग की कूटनीति के विरुद्ध लोक लहर पैदा की वहीं अपना पैतृक व्यवसाय करते हुए प्रभु-भक्ति का सदका उच्च आध्यात्मिक अवस्था भी हासिल की। प्रभु-कृपा के पात्र बनकर उन्होंने सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में विशेष मुकाम हासिल किया। आपको तथाकथित नीच जाति से सम्बंधित होने के बावजूद भी आपकी आध्यात्मिक प्राप्ति के कारण वक्त के प्रतिनिधि पुरोहितों ने आपकी खूब प्रशंसा की। फलस्वरूप आप अपने जीवन काल में ही दूर-दूर तक विख्यात हो गए। यही नहीं, कई समकालीन राजाओं और रानियों ने आपको अपना 'गुरु' स्वीकार कर लिया।

भाई गुरदास जी भक्त रविदास जी के बारे में वर्णन करते हुए लिखते हैं :

भगत भगत जग वजिआ चौह चका दे विच चमरेटा।
पाण्हा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा। *(वार १०:१७)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त रविदास जी की बाणी (४० शबद) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज करके उन्हें और प्रतिष्ठित किया। रागों के अनुसार उनकी बाणी का विवरण इस प्रकार है : सिरीरागु १, गउड़ी ५, आसा ६, गूजरी १, सोरठि ७, धनासरी ३, जैतसरी १, सूही ३, बिलावल २, गौंड २, रामकली १, मारू २, केदारा १, भैरउ १, बसंत १, मलार ३-- कुल शबद ४०।

भक्त रविदास जी की बाणी सर्वदेशीय है, जो जात-पात, देश, वर्ग, अमीर, गरीब आदि के सारे बंधनों को तोड़कर मानववाद को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इसमें समाहित उपदेश मनुष्य को चेतनायुक्त होकर आगे बढ़ने की

रीसर्च स्कॉलर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, मो. ९९१४४-१९४८४

प्रेरणा देते हैं। उनकी बाणी में उनकी गरीबी और समाज की बुरी व्यवस्था सम्बंधी कई संकेत मिलते हैं। अपनी गरीबी की दशा को बयान करते हुए भक्त जी फरमान करते हैं :

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
(पन्ना ८५८)

भक्त जी की बाणी ने सदियों से जाति-अभिमानियों के हाथों मसली जा रही आम जनता के मन में स्वाभिमान की चेतना पैदा करके एक नयी लोक लहर को जन्म दिया। उन्होंने प्रभु-भक्ति के साथ-साथ मानव-समानता की बात कही और जन्म-आधारित ऊंच-नीच के भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। भक्त रविदास जी ने लोगों को उच्च आध्यात्मिक अवस्था हासिल करने की प्रेरणा दी। यह वो अवस्था है, जहां हरि और हरि-जन में कोई भेद नहीं रहता :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)

यह अवस्था जीवन में पलटा (बदलाव) लाने वाली है। भक्त रविदास जी प्रभु-भक्ति का सदका अपने जीवन में आए क्रांतिकारी परिवर्तन का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि "जो (ब्राह्मण) उनको 'शूद्र' कहकर उनकी निंदा करते थे, आज वही आकर उन्हें नमस्कार करते हैं :

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ (पन्ना १२९३)

इस उच्चतम अवस्था को हासिल करने का मार्ग भक्त जी ने प्रभु का नाम-सिमरन बताया है। जो मनुष्य प्रभु का नाम जपते हैं, उनका जन्म-मरण से कोई मतलब नहीं रहता :

कहि रविदास जुो जपै नामु ॥
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥
(पन्ना ११९६)

आसा राग में आप लिखते हैं, हे प्रभु! तू चंदन की तरह उत्तम गुणों की खुशबू बांटने वाला है। तेरे साथ रहकर अर्थात् तेरी याद को अपनी सुरति में बसाने से हम में भी उत्तम गुणों की सुगंधि का वास हो गया है, जिससे हमें समाज में ऊंची पदवी हासिल हुई है :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥
(पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी के समय के नियम और आचरण की संहितायों का निर्धारण तथाकथित ब्राह्मण वर्ग किया करता था, इसलिए इस वर्ग के हितों का विशेष ध्यान रखा जाता था और अन्य वर्ग के लोगों को खासकर 'शूद्रों' को बिलकुल पीछे फेंक दिया जाता था। धार्मिक स्थानों पर केवल तथाकथित ऊंचे वर्ग के लोग ही जा सकते थे। अगर तथाकथित नीची जाति का व्यक्ति चला जाता तो उसको सख़्त सज़ा दी जाती थी। यही नहीं, धार्मिक ग्रंथ, जैसे वेद, पुराण आदि का पाठ केवल ब्राह्मण वर्ग ही कर सकता था। यदि कोई 'शूद्र' वेदों आदि का पाठ करता या सुनता पाया जाता तो उसकी जुबान काट दी जाती थी या सिक्का पिघलाकर उसके कान में डाल दिया जाता था।

भक्त रविदास जी ने तथाकथित निम्न वर्ग के लोगों के मन अंदर सदियों से समायी हीन भावना को बड़े क्रांतिकारी शब्दों के जरिये समाप्त किया और बताया कि ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, डूम, चंडाल तथा मलेश सब एक समान हैं और सभी प्रभु-भक्ति करके पवित्र हो सकते हैं :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडाल मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल

दोइ ॥ *(पन्ना ८५८)*

राग केदारा में आप जी ने स्पष्ट कर दिया कि प्रभु को केवल भक्ति प्यारी है न कि जाति :

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥
रे चित चेति अचेत ॥
काहे न बालमीकहि देख ॥
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥रहाउ॥
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥
अजामलु पिंगुला लूभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥
(पन्ना ११२४)

भक्त रविदास जी ने समाज के अंदर इस बात का एहसास जगाया कि मनुष्यता में ऊंच-नीच निर्धारित करना किसी तरीके भी जायज नहीं। प्रभु गरीब-निवाज़ है। उसकी नज़र में सभी समान हैं। वह अनाथों को सम्मान देने वाला है। वह जिसे चाहे बादशाह बना दे, जिसे चाहे रंक। जिसको यह संसार अछूत समझता है, वह उस पर विशेष रूप से खुश होता है, मेहरबान होता है। वह नीचों को ऊंचा करने वाला है। तथाकथित अलग-अलग जाति-वर्ण से सम्बंधित भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सधना जी और भक्त सैण जी उस प्रभु की शरण में आकर पूजनीय हो गए :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥रहाउ॥ज्ञज्ञज्ञज्ञज्ञज्ञज्ञज्ञ
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तूंही ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
(पन्ना ११०६)

भक्त रविदास जी ने मानव समानता के हक में जो सुर अलापा, उससे लोगों को इस बात का एहसास हुआ कि जाति-विभाजन आध्यात्मिक विकास के मार्ग में रुकावट नहीं बनता और प्रभु-भक्ति किसी खास वर्ग, जाति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि हर मनुष्य साधना के जरिए उच्च आदर्श की प्राप्ति कर सकता है। इस तरह आपने असहाय लोगों के लिए सदियों से बंद पड़े भक्ति के दरवाज़े खोले, लोगों में स्वाभिमान का भाव जागृत किया।

भक्त रविदास जी ने एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना की जिसमें दुख, तकलीफ, टैक्स, गरीबी, अमीरी, भूख, ऊंच-नीच, जाति आदि का कोई भेदभाव न हो। आज विश्व स्तर पर यू. एन. ओ. जैसी संस्थाएं जिस शांतमयी संसार को सृजित करने के लिए तत्पर हैं, भक्त रविदास जी ने लगभग ६०० वर्ष पहले हमारे सामने ऐसे समाज की रूप-रेखा तैयार कर दी थी जो अमीर और खुशहाल भी हो, जहां लोगों पर किसी तरह की पाबंदी न हो। यह भेद रहित समाज एक विश्व इकाई है। इसमें दाख़िल होने के समय किसी तरह का भेदभाव आदि नहीं किया जाता, सभी समान हैं। उच्च आध्यात्मिक अवस्था और सदाचारक गुणों के धारक होना जरूरी होगा। यहां सरहद, सरकार और रखवालों की जरूरत नहीं। यहां दुर्घटनाएं नहीं घटती :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ . . .
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥ *(पन्ना ३४५)*

सहायक सामग्री :
१. देविंद्र कुमारी महिंदरू, भक्ति काल के संतों की सांप्रदायिक सद्भावना
२. डॉ. कमलजीत कौर, भगत रविदास जी दी बाणी विच जात-पात दा संकलप; बाणी भगत रविदास : इक विवेचन
३. डॉ. बलदेव सिंघ बद्दन, बाणी भगत रविदास : इक विवेचन मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली, २०००
४. डॉ. धर्मपाल मैनी, रैदास साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९७९
५. डॉ. जसबीर सिंघ साबर, भगत रविदास सरोत पुस्तक
६. डॉ. धर्मपाल सिंगला, गुरु रविदास जी दा जीवन-दरशन
७. अमोल, सुरमुख सिंघ (संपा.) गुरमति प्रकाश (पंजाबी-मासिक), शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९७८
८. साहिब सिंघ, भगत बाणी सटीक, सिंघ ब्रादर्स, १९८२
९. डॉ. जसबीर सिंघ साबर, रविदास बाणी : बहुपक्षी अध्ययन, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, २००५
१०. डॉ. धर्मपाल सिंगला, रविदास : जीवन-दर्शन और रहस्य, दीपक पब्लिशर्ज, माई हीरां गेट, जलंधर
११. गुरु रविदास : जीवन और विचार, लोक गीत प्रकाशन, चंडीगढ़, १९९७
१२. स. गुरमुख सिंघ, भगत रविदास और उनकी बाणी, लाहौर बुक शाप, लुधियाना, २००३
१३. जोध सिंघ, भगत रविदास : जीवन और रचना, पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, १९७४
१४. दीवान सिंघ, भगत रविदास दरशन, टैक्सला प्रिंटिंग प्रैस, १९९५
१५. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, नेशनल बुक शाप, चांदनी चौक, दिल्ली, १९९५

कविता

अरदास

*मेरी माता साहिब कौर
मेरे पिता दशम गुरुदेव।
मैं करूं अरदास, मैं करूं जोदड़ी
मुझे दें शक्ति, मुझे बख्शें साधना
मुझे मिले जप जापना।
मेरे गुरुदेव सरबंस देव।
मैं करूं नमन, मैं लिख पाऊं वंदना
मैं कर पाऊं याचना।
शबद कर्म-धर्म आराधना
मन शबद-रंग रागना।
नम्रता मिले निम्नता,
विनती वंदना उपासना।
मैं करूं अरदास, मैं हो जाऊं अरदासना।
मैं लिख पाऊं शोभा,
बुलंद कर पाऊं आवाज़
हक, सच, सिद्धांत की।
कुर्बानी नूरानी की,
कमी न हो वृत्तांत की।
मेरी माता साहिब कौर,
मेरे पितामा दशम गुरदेव।
कुर्बानियों के अज़ीम कर्ता, सर्व सरबंस देव।
जिनसा न मिला कोई, कभी,
कहीं भी देवान देव।*

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

भक्त रविदास जी की भक्ति-विचारधारा

*-स. गुरप्रीत सिंघ भोमा**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व के धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रंथों में विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न बाणीकारों की बाणी है जो कि ३१ रागों पर आधारित है। यह बाणी आध्यात्मिक गुणों का ही नहीं मानवीय गुणों का भी बखान करती है। भक्त रविदास जी इन बाणीकारों में से एक हैं। भक्त रविदास जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ४० शबद हैं जिनका मुख्य विषय परमात्मा के अस्तित्व के बारे में जानकारी के अलावा नाम-सिमरन, प्रभु-प्रेम, परमात्मा से मिलाप के साथ-साथ किस प्रकार परमात्मा की कृपा से सांसारिक पदार्थों का, माया की तृष्णा का, दुविधा, दुख-कलेश आदि का सर्वनाश किया जा सकता है, आदि है।

सामान्यत: भक्त रविदास जी एक क्रांतिकारी, समाज-सुधारक और धर्मोपदेशक के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने जहां अपनी बाणी द्वारा परमात्मा से मिलन की अवस्था का व्याख्यान किया है वहीं आनंद-मग्न समाज का भी सुंदर चित्रण किया है। दैवी एवं नैतिक गुणों का अनुसरण करने की प्रेरणा आपकी बाणी में मिलती है।

आओ, भक्त रविदास जी की बाणी के कुछ मुख्य सिद्धांतों को अवलोकित करें :

१) परमात्मा एवं जीव का सम्बंध : भक्त रविदास जी ने अपनी बाणी में मुख्य रूप में परमात्मा की उपमा का ही वर्णन किया है। उनके सारे शबद दैवी प्रेम से ओत-प्रोत हैं। उनके अनुसार परमात्मा के अस्तित्व के बारे में कोई भ्रांति नहीं है अपितु हम सब में मौजूद है, इसलिए परमात्मा और जीव में कोई अंतर नहीं है।

भक्त रविदास जी परमात्मा और अपने (जीव) में कोई विभिन्नता न समझते हुए कहते हैं, हे परमात्मा! तेरे और मेरे में कौन-सी भिन्नता है? हम दोनों एक ही हैं। हमारा तुम्हारे साथ वही सम्बंध है जो सोने के कड़े का सोने (स्वर्ण) के साथ और पानी (समुद्र) का पानी की तरंगों के साथ होता है। कहने से तात्पर्य, सोने का कड़ा भी मूल रूप में सोना ही होता है और पानी की तरंगें भी पानी ही होती हैं :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)

भक्त जी प्रभु को पवित्र, कृपालु, दयालु, परोपकारी मानते हुए फरमान करते हैं :

--हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि . . . ॥
(पन्ना ६८६)
--हउ अउगन तुम्ह उपकारी ॥ (पन्ना ४८६)

२) परमात्मा सर्वनिवासी है : भक्त रविदास जी अपनी बाणी में मानव को उपदेश करते हुए फरमान करते हैं कि परमात्मा सृष्टि के हर कण में मौजूद है। उसने ही सृष्टि की रचना की है और वही उसमें निवास कर रहा है। परमात्मा ने ही सृष्टि में अनेक रूप वाले प्राणी बनाये हैं। उन सब में परमात्मा स्वयं ही मौजूद

**प्रूफ़ रीडर, गुरमति ज्ञान, मो ९८७८५-५८८५१*

है। हर जगह पर विद्यमान होकर वो संसार के हर रंग को देख रहा है। वो हमसे जरा भी दूर नहीं है, हमारे हाथों से भी समीप है और जो कुछ भी जगत में घटित हो रहा वो सब कुछ उसकी रज़ा में ही हो रहा है :

सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥
(पन्ना ६५८)

३) मानव-जीवन का लक्ष्य : बड़ी विडंबना की बात है कि जीवात्मा अहंकाररत होकर परमात्मा से दूर होती जाती है, सांसारिक विषय-विकारों के बंधन में बंध जाती है और यह भूल ही जाती है कि संसार में आने का मुख्य लक्ष्य क्या है। भक्त जी मनुष्य को इन विषय-विकारों में न फंसने से आगाह करते हुए कहते हैं कि मानव-जीवन का मुख्य लक्ष्य है-- परमात्मा की प्राप्ति तथा उसका नाम-सिमरन करके उसकी भक्ति करने में लीन रहना। आगे वे बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहते हैं कि मानव जीवन दुर्लभ है। इसको पदार्थ एकत्र करने में, धन-संपत्ति एकत्र करने में व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। धन-पदार्थ सब यहीं रह जाने वाले हैं :

करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ (पन्ना ७९४)
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥
(पन्ना ४८६)

४) संसार नश्वर है : भक्त रविदास जी संसार को मिथ्या मानते हैं। वे कहते हैं कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु नाशवान है। इस संसार की सृजना करने वाला प्रभु और उसका नाम ही सात्विक एवं स्थाई है जिसका कदापि नाश नहीं हो सकता। जगत को नाशवान मानते हुए भक्त जी इसकी तुलना कसुंभे के पुष्प से करते हैं कि जिस प्रकार कसुंभे के पुष्प का रंग कुछ ही समय के लिए होता है अर्थात् अस्थाई होता है, उसी तरह संसार भी कुछ ही समय के लिए है अर्थात् नाशवान है, मिथ्या है, केवल मेरे प्रभु का नाम-रंग ही मजीठ रंग की भांति है अर्थात् सर्वदा कायम रहने वाला है :

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥
(पन्ना ३४६)

५) प्रभु नीचों को भी ऊंचा करने के समर्थ है : इस मिथ्या संसार में मनुष्य द्वारा बनाए गए तथाकथित नीच, गरीब आदि लोगों को संसार के तथाकथित उच्च जाति के लोग बुरा समझते हैं अर्थात् उनसे नफ़रत करते हैं। वे उनकी परछाईं भी अपने तन पर नहीं पड़ने देते। वे उसके स्पर्श-मात्र से अपना जन्म भ्रष्ट हुआ समझते हैं। अपने सद्गुणों के कारण जो भी मनुष्य प्रभु-भक्ति करता है, प्रभु उसे ही गले से लगा लेते हैं। भक्त रविदास जी ने गरीबों का एक-मात्र सहारा परमात्मा को मानते हुए सब कुछ उसी पर छोड़ दिया है। भक्त रविदास जी फरमान करते हैं कि प्रभु गरीबों को भी यश प्रदान कर देता है, उनके सर पर भी छत्र डुला देता है। हे प्रभु! ऐसा कार्य तेरे अतिरिक्त अन्य कौन कर सकता है अर्थात् कोई नहीं :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
(पन्ना ११०६)

६) सद्गुणों को ग्रहण करना : भक्त रविदास जी कहते हैं कि परमात्मा को पाने के लिए सद्गुणों को ग्रहण करना अनिवार्य है, क्योंकि सद्गुणों को ग्रहण किए बिना कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं बन सकता। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है कि *"विणु गुण कीते भगति न होइ ॥"* अर्थात् अच्छे गुणों को धारण किए बिना

प्रभु-भक्ति असंभव है। भक्त जी भी बताते हैं कि हमें मन, बाणी एवं कार्यों द्वारा होने वाली बुराइयों से बचना चाहिए, मन में बुरे ख़्याल नहीं आने देने चाहिए, अपने मुख द्वारा बुरे शब्द नहीं बोलने चाहिए और न ही ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे किसी अन्य का बुरा हो या उसका परिणाम बुरा हो। हमें संत-जनों द्वारा बताए हुए सत्यता के मार्ग पर ही चलना चाहिए :

--मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
(पन्ना ४८७)

--संत आचरण संत चो मारगु . . .(पन्ना ४८६)

भक्त जी आगे उपदेश करते हैं कि हमें मुख्य रूप से प्रेम, दया एवं सेवा आदि गुणों को ग्रहण करना चाहिए। परमात्मा से प्रेम पाने के लिए मनुष्य-मात्र से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य परमात्मा द्वारा ही बनाए हुए हैं :

प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ (पन्ना ४८६)

७) अवगुणों को त्यागना : भक्त रविदास जी ने जहां सेवा, सिमरन, दया, प्रेम, परोपकार आदि सद्‌गुणों को धारण करने को कहा है वहीं अवगुणों का त्याग करना भी अति आवश्यक माना है। अवगुण मनुष्य के हर मार्ग में बाधा डालते हैं, चाहे वो आध्यात्मिक हो या सामाजिक। मनुष्य-मात्र को भ्रम, निंदा, चुगली, अहंकार, पाप आदि को त्यागना चाहिए, क्योंकि ये मनुष्य की सामाजिक प्रगति में रुकावट तो डालते ही हैं, आध्यात्मिक क्षेत्र (प्रभु-मिलन) में भी रुकावट बनते हैं।

भक्त रविदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! जितनी देर तक हम जीवों के मन में अहंकार उपस्थित रहता है उतनी देर तक तुम हमारे हृदय में प्रकट नहीं हो सकते, किंतु जब तुम हमारे हृदय में प्रकट हो जाते हो तो मैं (अहंकार) सदैव के लिए मिट जाती है :

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
(पन्ना ६५७)

भक्त जी ने दूसरों की निंदा करने को भी बहुत बड़ा अवगुण माना है :

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥
साध का निंदकु कैसे तरै ॥
सरपर जानहु नरक ही परै ॥ (पन्ना ८७५)

८) प्रभु से प्रीति : भक्त रविदास जी उपदेश करते हैं कि मनुष्य की प्रभु से प्रीति (प्रेम) होनी चाहिए। परमात्मा का नाम प्रतिपल हृदय में बसाये रखना, हमेशा उसे अपने अंग-संग समझना, सर्वदा उसका नाम-सिमरन करते रहना ही प्रभु से प्रीति है और यह प्रीति प्रभु की कृपा से ही बनी रह सकती है।

भक्त रविदास जी परमात्मा से अपनी प्रीति का बखान करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु! तेरी और मेरी प्रीति इतनी प्रगाढ़ है कि अगर तू एक सुंदर पहाड़ है तो मैं उस पहाड़ का मोर हूं एवं तुझे देखकर खुशी से नृत्य करता हूं। तेरी-मेरी प्रीति चंद एवं चकोर की तरह है। तू चांद (शशि) है तो मैं तेरी चकोर हूं। तुझे देखकर ही मैं प्रसन्नता से बोलता हूं। तेरा-मेरा प्रेम बहुत बढ़ गया है। अब तू मुझसे नाता न तोड़ेगा तो मैं भी तेरे से जुदा नहीं हो सकता। मैं तुम से नाता तोड़कर और किसके साथ जोड़ सकता हूं? अन्य कोई तुम्हारे जैसा है ही नहीं है जिसके लिए मैं तुझे छोड़ सकता हूं :

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥

तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥
(पन्ना ६५८)

९) *प्रभु का भक्त :* प्रभु का नाम-सिमरन प्रभु-भक्त को इतना महान बना देता है कि उसके तुल्य अन्य कोई नहीं हो सकता। भक्त रविदास जी कहते हैं कि चाहे दुनिया का बड़ा विद्वान हो या विजेंद्र शूरवीर, चाहे छत्रपति नरेश हो या कोई भी मनुष्य, परमात्मा के भक्त के बराबर नहीं हो सकता अर्थात् प्रभु का भक्त सबसे उत्कृष्ट है। आगे वे कहते हैं कि भक्त-जनों का जन्म लेना ही विश्व में मुबारक है। वे तो प्रभु के चरणों में रहकर ही जी सकते हैं, जैसे चुपत्ती पानी के पास रहकर भी हरी रह सकती है :

पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ *(पन्ना ८५८)*

१०) *प्रभु भक्तों के प्यार में बंधा है :* प्यार मात्र शब्दों तक ही सीमित नहीं है, यह एक अद्वितीय वस्तु है। प्रेम के मार्ग द्वारा ही भक्त-जन अपने प्रभु तक पहुंचते हैं। जिस प्रकार भक्त-जन अपना स्वभाव मिटाकर अपने प्रभु के प्यार में लीन रहते हैं उसी प्रकार परमात्मा भी अपने भक्त-जनों से बहुत प्रेम करता है; वो भी अपने भक्त-जनों के साथ प्रेम की डोर में बंधा हुआ है। प्रभु-भक्ति में रंगे हुए भक्त रविदास जी परमात्मा को कहते हैं कि हे प्रभु! तेरे भक्त जैसा प्यार तेरे साथ करते हैं वो तुमसे छिपा हुआ नहीं रह सकता, तुम इसे अच्छी तरह से जानते हो। हम तुम्हारे मोह की डोर से बंधे हुए हैं और हमने तुम्हे भी अपने प्यार की डोरी से बांध लिया है। हम तो तुम्हे सिमर कर मोह (विषय-विकारों) के जाल से निकल जाएंगे, परंतु तुम हमारे प्यार के जाल से किस प्रकार निकलोगे?

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ *(पन्ना ६५८)*

भक्त रविदास जी ने भक्ति-विचारधारा के बारे में बड़ी गहराई से मानव-प्रेरणा की है। इसी विचारधारा से ही प्रभु-गुणों से सम्पन्न हुआ जा सकता है।

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें।

-संपादक।

भक्त रविदास जी का जीवन

*-बीबी बलवंत कौर चांद**

श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥

पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥ *(पन्ना ७३३)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करते समय अलग-अलग धर्मों के साथ सम्बंध रखने वाले पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज की। भक्त तो उस समय बहुत थे मगर गुरु जी ने उन्हीं भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज की जो गुरमति की कसौटी पर पूरी उतरती थी। भक्त रविदास जी के चालीस शबद सोलह रागों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं।

भक्त रविदास जी का जन्म नीच समझी जाती चमार जाति में हुआ। उनके जन्म सम्बंधी समय एवं स्थान के बारे में इतिहासकारों में मतभेद हैं। आम सहमति के अनुसार भक्त रविदास जी का जन्म माघ सुदी १५, संवत् १४३३ तदनुसार २३ जनवरी, १३७६ ई को बनारस के निकट हुआ माना जाता है। भक्त जी के पिता का नाम श्री रघु राय तथा माता का नाम करमा देवी था। माना जाता है कि इनका जन्म रविवार के दिन होने के कारण इनका नाम 'रवि' से 'रविदास' पड़ गया। भक्त रविदास जी के पूर्वज मृत पशुओं को ढोने का काम करते थे। उन्होंने अपनी बाणी में अपने भाईचारे का ज़िक्र कई जगह पर किया है :

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ *(पन्ना १२९३)*

अन्यत्र फरमान करते हैं :

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥

तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥ *(पन्ना ६५९)*

स्पष्ट है कि भक्त रविदास जी जाति-बंधनों से अत्यंत दुखी थे। उन्होंने अपनी बाणी के माध्यम से उपदेश दिया कि परमात्मा की नज़र में कोई ऊंची-नीची जाति नहीं है। शुभ कर्मों के कारण, ऊंचे आचरण के कारण मनुष्य ऊंची पदवी पा सकता है। भक्त रविदास जी तथाकथित नीची जाति से उठकर प्रभु-प्रेमा-भक्ति तथा अपने आदर्श जीवन का सदका इतने ऊंचे हो गए कि चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हो गए।

भक्त रविदास जी बचपन से ही परोपकारी एवं सहानुभूति का भाव रखते थे। वे साधु-संतों की सेवा में तथा गरीबों की भलाई में लगे रहते थे। आप जी का दिमाग बड़ा रोशन एवं तेज बुद्धि वाला था।

आप जी के पिता जी ने आप जी का विवाह छोटी आयु में ही कर दिया था। आप अपने गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए अपना पैतृक व्यवसाय जूते बनाना करते रहे। आप गरीबी में भी बड़े सब्र-संतोष से गुज़ारा करते और हर दम प्रभु-सिमरन करते रहते। प्रभु-भक्ति करते हुए वे उस अवस्था पर पहुंच चुके

**२५५, अजीत नगर, श्री अमृतसर-१४३००१*

थे कि उनमें तथा परमात्मा में कोई अंतर न रहा :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)

कहा जाता है कि भक्त रविदास जी की गरीबी-दशा को देखते हुए कोई प्रभु का प्यारा पुरुष इनको पारस दे गया और उसके स्पर्श से सोना बनाकर दिखा भी गया। जब वो कई वर्षों के बाद वापिस भक्त जी के पास आया तो भक्त जी को गरीबी की उसी दशा में देखकर दंग रह गया। उसने पूछा, "भक्त जी! पारस कहां है?" भक्त रविदास जी ने कहा कि "जिस स्थान पर रख गए थे, वहीं होगा, उठा लो।" ऐसा था भक्त रविदास जी का जीवन। उन्हें दुनिया के पदार्थों, धन-दौलत से ज्यादा मोह प्रभु-नाम के अमूल्य धन का संग्रह करने का था।

भक्त रविदास जी ने मानव शरीर के स्वरूप तथा उसकी नाशमानता के बारे में फरमाया है :

-- जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥
हाड मास नांड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥
(पन्ना ६५९)

-- जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ (पन्ना ७९३)

भक्त रविदास जी ने एक आदर्श राज्य की कल्पना की। 'बेगम पुरा' का संकल्प ऐसे आदर्श का स्रोत ही कहा जा सकता है :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ (पन्ना ३४५)

उस समय का समाज फोकट के कर्म-कांडों में जकड़ा हुआ था, जैसे पत्थर पूजना, ग्रह-नक्षत्र मानना, व्रत रखना, शगुन-अपशगुन करना आदि। भक्त रविदास जी ने सब प्रकार के फोकट के कर्म-कांडों का ज़ोरदार खंडन किया और केवल नाम-सिमरन करने का उपदेश दिया।

भक्त रविदास जी भक्त रामानंद जी के शिष्य थे और भक्त कबीर जी के समकालीन थे। आप एक ईश्वरवाद में विश्वास रखते थे। आम इंसान से लेकर बड़े-बड़े राजा भी आप जी के श्रद्धालु बन गए थे। गाग्रेन का राजा पीपा, काशी का राजा वीर सिंह, मेड़ता की महारानी मीरा बाई तथा मेवाड़ की रानी झाली आप जी के श्रद्धालु थे।

जीवन के अंतिम दिनों में भक्त रविदास जी परिवार सहित महारानी मीरा बाई की विनती पर चित्तौड़ रहने लग गए थे और वहीं परलोक गमन कर गए थे। भक्त रविदास जी की विचारधारा की आधुनिक समाज को अति आवश्यकता है। हम उनके पद-चिन्हों पर चल सकें, यही हमारा सौभाग्य होगा। ❂

मानवतावादी भक्त रविदास जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

भक्त रविदास जी चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी की भक्त-माला में विशेष स्थान रखते हैं, क्योंकि उनके विचार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरमति विचारधारा के आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक एवं भक्ति-साधना से सम्बंधित समस्त सिद्धांतों से परिपूर्ण हैं। भक्त रविदास जी की जन्म-तिथि, जन्म-स्थान एवं देहावसान-समय के सम्बंध में विद्वानों के विभिन्न विचार हैं, किंतु अधिकतर विद्वान आपका जन्म माघ सुदी १५, बिक्रमी संवत् १४३३ ही मानते हैं। जहां तक जन्म-स्थान की बात है, भक्त रविदास जी ने स्वयं अपनी बाणी में बनारस अथवा उसके आस-पास का निवासी होना एवं व्यवसाय चर्मकार स्पष्ट कर दिया है :

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ (पन्ना १२९३)

इसी सम्बंध में भाई गुरदास जी भी प्रौढ़ता करते हैं :

जनु रविदासु चमारु होइ चहु वरना विचि करि वडिआई । (वार १२:१५)

अल्पायु से ही भक्त रविदास जी विद्वान, परिश्रमी एवं ईश्वर-भक्ति में परिपक्व हो चुके थे। कोई भी बाधा आपके ईश्वर-प्रेम को प्रभावित न कर सकी। आप निरंतर भक्ति में लीन रहते हुये शुद्ध अर्जित कमाई में से स्वयं की रोजी-रोटी के अतिरिक्त सहानुभूति रखते हुए अन्य जरूरतमंदों की सहायता भी किया करते थे। भक्त जी आध्यात्मिक प्रतिभा के धनी होते हुए विनम्र, श्रमजीवी, संगीतज्ञ, उत्कृष्ट कवि, महान विचारक एवं आदर्शवादी थे।

ब्रह्मज्ञान, समानता, ईश्वर-भक्ति, सेवा, ईमानदारी की श्रमजीविका के वास्तविक सत्य एवं आध्यात्म के तत्वों से समाहित श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जिसकी अमृत बाणी यदा-कदा-सर्वदा मानवता में नव प्राणों का संचार कर रही है, में भक्त रविदास जी द्वारा रचित ४० शबद (पद) एवं एक सलोक संग्रहीत है। सद्गुण मानव को विकास की ओर अग्रसर करते हैं, अवगुण बाधक बन अंधकारमय जीवन की ओर ले जाते हैं। मनुष्य को अवगुणों का त्याग कर सद्गुणों को ग्रहण करना चाहिए, ताकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारों से बचा जा सके :

काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥
कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ (पन्ना ९७४)

भक्त रविदास जी ने प्रेम, दया, सेवा, परोपकार, विनम्रता के गुण अपनाने पर बल देते हुए 'मानव-मानव एक समान' एवं *"हरि को भजे सो हरि को होई "* का सिद्धांत प्रतिपादित किया है जहां परमात्मा से प्रेम-भाव दर्शाते हुए मानव-मात्र के अनुरूप सहानुभूति रख मन, वचन, कर्म से सद्मार्ग पर चलना है।

भक्त रविदास जी मध्य काल के क्रांतिकारी एवं समाज-सुधारक थे, जिन्होंने भूले-भटकों के

५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७; मो. ९४१३६-५१९१७

हृदय परिवर्तित कर जनमानस में व्याप्त अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों को निर्मूल साबित कर सृष्टि-रचना से जोड़ा। आनंदमयी जीवन के लिए मनुष्य को भ्रम, पाप, विकार, निंदा, आडंबर आदि दोषों से मुक्त रहना चाहिए। भक्त जी जन्म आधारित वर्ण-व्यवस्था, ऊंच-नीच तथा भेदभाव के कट्टर आलोचक थे और वे उच्चता-नीचता का आधार भी मनुष्य का आचरण ही मानते थे। एकेश्वरवाद के अनुरूप सारे एक ही मिट्टी से बने हुए हैं और उन्हें बनाने वाला भी एक ही है :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

भक्त रविदास जी की बढ़ती ख्याति और लोकप्रियता से प्रभावित होकर राजस्थान के प्रसिद्ध चित्तौड़गढ़ के राजपूत झाला राजपरिवार राणा सांगा की रानी भी आपकी श्रद्धालु हो गई थी। एक समय की घटना है कि भक्त रविदास जी महारानी के आमंत्रण पर चित्तौड़गढ़ पधारे, जहां कई 'ब्राह्मणों' को भी भोजन हेतु बुलाया हुआ था। 'दलित' मानते हुए 'ब्राह्मणों' ने भक्त जी के साथ दुर्व्यव्हार किया और उनके साथ भोजन करने से मना कर दिया। भक्त रविदास जी ने अपनी प्रतिभा तथा प्रमाणों से उनका जाति-आधारित अहं तोड़कर उन्हें एहसास करवाया कि जाति-भेदभाव सब मिथ्या हैं। सामाजिक एवं सांसारिक रूप से चाहे वे निर्धन एवं 'दलित' थे किंतु आध्यात्मिक पक्ष से बहुत अमीर एवं उच्चस्थ थे। उन्होंने अपनी बाणी में माया, संसार, ईश्वर और मानव के परस्पर सम्बंधों का बड़े सुंदर ढंग से समावेश किया है। भक्त रविदास जी ने मनुष्य की दशा का वर्णन इस प्रकार किया है :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥रहाउ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ (पन्ना ४८७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त रविदास जी की बाणी मनुष्य को सामाजिक, धार्मिक, नैतिक मूल्यों से जोड़ती हुई समानता, आदर, आत्मीयता की परिधि में मधुभाषण, भक्ति, विनम्रता द्वारा उस परमोच्य अवस्था तक पहुंचाती है, जहां दैहिक, भौतिक, दैविक का कोई काम, ताप, दुख नहीं रहता है और यही वैश्वीकरण युग में विश्व-शांति का आदर्श स्रोत है, जिसकी आज परम आवश्यकता है और अनुसरणीय है।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

जैतो के मोर्चे की पृष्ठभूमि का अवलोकन

-ज्ञानी गुरचरन सिंघ (श्री मुकतसर साहिब)

बीसवीं शताब्दी में सिक्ख राज्य का अगर कोई निशान शेष रह गया था तो वो पंजाब की पटियाला, नाभा, जींद (संगरूर), कपूरथला, फ़रीदकोट, कलसीआ आदि रियासतें थीं। इनमें से पहली तीन को 'फूलकीआं रियासतें' कहा जाता था। खालसा पंथ इनको अपना आवश्यक अंग समझता था तथा इनके सुख-दुख में शामिल होता रहा।

अकाली लहर के समय सरकार के विरुद्ध लगे अकाली मोर्चों में से बड़ा तथा लंबा मोर्चा 'जैतो का मोर्चा' ही गिना जाता है। इस मोर्चे की पृष्ठभूमि की मुख्य शख़्सियत महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा नरेश थे, जिन्होंने निर्भयता से इस लहर में योगदान डाला।

नाभा के महाराजा हीरा सिंघ (१८४३-१९११ ई.) के गृह (हीरा महल, नाभा) में रानी जसमेर कौर की कोख से ४ मार्च, १८८३ ई. को टिक्का रिपुदमन सिंघ का जन्म हुआ। प्रसिद्ध विद्वान भाई कान्ह सिंघ नाभा जैसे रियासती अहिलकारों तथा सुयोग्य अध्यापकों की निगरानी में उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। भाई कान्ह सिंघ नाभा की शिक्षा का ही असर था कि उनके आगे के समस्त जीवन में सिक्खी का प्रभाव प्रधान रहा। यहां तक कि जब उनकी बहन की शादी के समय धौलपुर के राजा साहिब के साथ आये राजपूत बारातियों ने खुलेआम हुक्का-नोशी की तो आप ने अपने पिता महाराजा हीरा सिंघ के पास रोष प्रकट किया। वे शराबनोशी के विरुद्ध भी थे। आम राजाओं की तरह वे शारीरिक सजावट के लिए हीरे, जवाहरात तथा बहुमूल्य आभूषण नहीं पहनते थे। वे अपना दाढ़ा (दाढ़ी) भी खुला रखते थे।

उनकी पोशाक भी बहुत साधारण होती थी। वे अपनी आमदन में से दसवंध भी निकाला करते थे। उन्होंने मसतूआणा में अकाल कॉलेज के लिए आवश्यक विशाल ज़मीन तथा लाखों रुपये भेंट किए। यह भी कहा जाता है कि हिंदू यूनीवर्सिटी, बनारस में गुरुद्वारा साहिब की इमारत पर भी आप जी द्वारा एक लाख रुपये की राशि खर्च की गई।

वे प्रगतिशील ख़्यालों के थे। पंथ-सेवा, कौमप्रस्ती तथा देश-भक्ति का जज़्बा उनके समूचे जीवन में प्रबल रहा। सिक्ख इतिहास में हठी सिंघों के बड़े नाम हैं। अपने जीवन में मैंने चार सिंघों का हठ प्रत्यक्ष रूप में देखा है, जिनमें आप भी एक हैं। अन्य तीन नाम हैं-- सरदार खड़क सिंघ जी सियालकोटी, जिनको पंथ का बेताज़ बादशाह कहा जाता था; स. सेवा सिंघ जी ठीकरीवाला तथा स. दरशन सिंघ जी फेरूमान।

टिक्का रिपुदमन सिंघ १९०६ से १९०८ ई. तक वायसराय की कौंसिल के सदस्य रहे। इस काल में आप ने सिक्ख-रीति के अनुसार हुए विवाह की प्रवानगी हेतु एक बिल तैयार करवाया जो बाद में 'अनंद मैरिज एक्ट' बना। इस कानून की आवश्यकता थी, जो सिक्ख धर्म की सेवा समझकर आप ने की।

अपने प्रगतिशील विचारों तथा आज़ाद ख़्यालों के कारण आप ने कौंसिल में सरकारी प्रस्तावों का समर्थन करने की बजाय नेशनलिस्ट सदस्यों-- जी. के. गोखले, आर. बी. घोष तथा पंडित मदन मोहन मालवीय आदि द्वारा ली गई

पोजीशन का समर्थन किया। इसी कारण आप हिंद सरकार की आंखों में खटकने लगे।

अपने पिता महाराजा हीरा सिंघ के परलोक गमन कर जाने के बाद आप २४ जनवरी, १९१२ ई को राज्य-गद्दी पर बैठे। आम तौर पर किसी हिंदोस्तानी राजा के गद्दी संभालने के समय वायसराय हिंद द्वारा उस इलाके के राजनीतिक एजेंट या किसी अन्य उच्चाधिकारी अंग्रेज अफ़सर को विशेष रूप से बुलाया जाता था। इस रस्म में वो विशेष भूमिका निभाया करता था, परंतु आप ने ऐसा न किया। आप सिक्ख-रीति के अनुसार खुद ही राज्य-गद्दी पर विराजमान हो गए। इस बात से हिंद सरकार बहुत परेशान हुई तथा आपको बागी समझा जाने लगा। दूसरी बड़ी जंग के समय १९१४-१५ में जो देश-भक्त हिंदोस्तान में गदर करवाने के लिए अमेरिका, कनाडा आदि देशों में से हिंदोस्तान पहुंचे, उनके साथ आप जी द्वारा सहानुभूति रखने की रिपोर्टें भी हिंद सरकार के पास पहुंची।

दुर्भाग्यवश पटियाला एवं नाभा के महाराजाओं, जो एक ही ख़ानदान में से थे, के मध्य घरेलु झगड़ों के कारण दुश्मनी पैदा हो गई, जिसको सरकार ने अपनी कुटिल नीति अपनाकर बहुत ही तीखा कर दिया। इसी दौरान अकालियों द्वारा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर शुरू हो गई। सरकार इस लहर में अकालियों का विरोध एवं गुरुद्वारा साहिबान पर काबिज़ अयोग्य महंतों की हिमायत करती थी। महाराजा पटियाला सरकार-पक्षीय होने के कारण अपनी रियासत के अकालियों पर सख़्ती करता था, परंतु महाराजा नाभा अकालियों का पक्ष लेता था।

२० फरवरी, १९२१ की सुबह को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के अंदर गए १०० से ज्यादा अकाली सिंघों के एक जत्थे को महंत नरैण दास ने अपने बदमाशों से गोलियों एवं तेजधार हथियारों से शहीद करवा दिया।

इस साके ने सिक्ख कौम में भारी जोश भर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ५ अप्रैल, १९२१ ई को इस साके के विरुद्ध रोष-दिवस मनाये जाने के लिए हल्ला बोल दिया। सिंघों तथा सिंघणियों को काली दसतारें एवं दुपट्टे सजाने तथा जगह-जगह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ के भोग डाले जाने व दीवान सजाने की अपील की।

सिक्ख राजाओं में से केवल महाराजा नाभा ने ही इस अपील पर अमल किया। आप ने अपने शीश पर काली दसतार सजाई तथा रियासत भर में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा की गई अपील पर इस्तेमाल किए जाने के लिए शाही हुक्म जारी किया, जो इस प्रकार था :

"पेश गाहि खास तों हुकम होया है कि चूंकि एस वरे दा ५ अपरैल दा दिन सिक्खां दी कुरबानी दी यादगारी विच, जो दरबार ननकाणा साहिब विच शहीद हो गए हन, मातम दिन मनाया जाणा नीयत हो चुका है, एस लई रिआसत विच एस दिन कुल दफतर बंद रहिण अर तोप दा चलणा ते घड़िआल का वज्जणा बंद रहे जैसा कि हड़ताल दे समिआं 'ते हुंदा है।"

इसके अलावा महाराजा साहिब ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हुक्म पर अमल करते हुए अपने शीश पर काले रंग की दसतार सजाई तथा उन गुरुद्वारों में, जिनका प्रबंध सीधा रियासत के हाथ में था, शहीदों की याद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ किए जाने का हुक्म दिया, क्योंकि अन्य किसी रियासत में ५ अप्रैल का दिन इस तरह नहीं मनाया गया था और न ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अपील की तरफ ध्यान दिया, इसी लिए महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा को गद्दी से उतारने के लिए सरकारी यत्न तेज हो गए। अंग्रेजी सरकार बहुत चालाक थी। सीधा वार करने की जगह

उसने महाराजा पटियाला को ही आगे लगाया, जिसने महाराजा नाभा के विरुद्ध कई संगीन दोष लगाकर सरकार हिंद को दख़ल देने के लिए दरख़्वास्त दी।

इस तरह दोनों राजाओं ने दरम्यान कटुता और बढ़ती गई। एक ने दूसरे के अहिलकार खरीदे, सरकारी रिकार्ड चोरी करवाये, रिश्वतों का दौर चला तथा बहुत नीची हरकतें की गईं। कई दर्दी सिक्खों तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भी यत्न किए कि पटियाला तथा नाभा का एक ही घराना है और इस घराने का सिक्ख इतिहास के साथ गहरा सम्बंध है, इसलिए झगड़ा ख़त्म हो जाए, परंतु कोई यत्न सफल न हुआ।

महाराजा पटियाला को तो यह पक्का निश्चय पहले ही था कि सरकार का फैसला उसके पक्ष में जायेगा। उसने ऐसी नीति अपनाई कि महाराजा नाभा भी झगड़ा सरकार के सपुर्द करने के लिए सहमत हो गए। हिंद सरकार द्वारा १९२२ ई के आखिर में इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज मिस्टर सटूअर्ट को इस झगड़े की जुडीशियल पड़ताल करने के लिए नियत कर दिया गया। अंबाला में ३ जनवरी, १९२३ ई से ३ मार्च, १९२३ ई तक पड़ताल की गई। जून के पहले सप्ताह तक पड़ताल की रिपोर्ट पूर्ण होकर वायसराय लार्ड रीडिंग तक पहुंच गई। सरकार ने इस रिपोर्ट को छापने से संकोच किया और यह बताया गया कि महाराजा नाभा के विरुद्ध लगे कई दोष सच्चे हैं तथा रियासत के प्रबंध के बारे में भी घोर नुक्ताचीनी की गई है।

इसके बाद महाराजा के अंग्रेज दोस्तों के द्वारा धमकियां दी गईं कि पड़ताल के आधार पर महाराजा के विरुद्ध मुकद्दमा चलाकर उसको राज्य-गद्दी से अलग कर दिया जायेगा। उनके जरिए महाराजा को मना लिया गया कि वो सहमति से गद्दी छोड़कर गुज़ारे के लिए रकम ले ले तथा देहरादून या मसूरी में जाकर रहे। यह बात मनाने के लिए महाराजा साहिब पर लगातार दबाव डाला जा रहा था, जिस कारण वे बेहद परेशान थे। उनके अंग्रेज दोस्तों ने विश्वासघात करके महाराजा से लिखित करवा ली कि वे अपनी मर्जी से राज्य-गद्दी से अलग हो रहे हैं। यह लिखित लेकर वे वायसराय के पास पहुंचाने के लिए शिमला, जो हिंद सरकार की ग्रीष्म ऋतु की राजधानी होती थी, के लिए चल पड़े। उनके चले जाने के बाद महाराजा को अपनी गलती का एहसास हुआ और उनके द्वारा लिखित वापिस लाने के लिए आदमी पीछे भेजे गए। भेजे गए आदमी बड़ी तीव्र चाल से उनको अम्बाला जा मिले, परंतु उन्होंने लिखित वापिस करने से इंकार कर दिया और शिमला वायसराय के पंजाब रियासतों के एजेंट मिनचन के पास पहुंचा दी।

९ जुलाई, १९२३ ई को सुबह होते ही हिंद सरकार द्वारा भेजी गई फौज ने हीरा महल को घेरा डाल लिया तथा रियासत नाभा के लिए हिंद सरकार द्वारा स्थापित किए गए कायम मुकाम ऐडमनिस्ट्रेटर (प्रशासनिक) मिस्टर सी. एम. जी. ओगलवी तथा मिनचन ने रियासत का प्रबंध संभालकर महाराजा को सरकारी निगरानी तले देहरादून पहुंचा दिया। नाभा के अपने राजमहल तथा कई पुश्तों से चली आ रही अपनी रियासत के स्वामित्व से अलग करके जबरन देहरादून ले जाने का दृश्य दिल दहला देने वाला था। अपनी मर्जी से गद्दी छोड़ने वाली जिस लिखित पर महाराजा के दस्तख़त कराये गए थे, उसमें दर्ज दस शर्तों के अनुसार महाराजा को गुज़ारे के रूप में तीन लाख रुपये सालाना नियत हुए थे। वे किसी धार्मिक कार्य के लिए ही, वो भी सरकारी मंजूरी से, नाभा में दाख़िल हो सकते थे।

महाराजा नाभा को गद्दी से उतारे जाने पर मात्र सिक्ख ही नहीं, हिंदू एवं मुसलमान

नेताओं तथा पंजाब की प्रेस ने भी सख़्त रोष प्रकट किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने महाराजा से सहानुभूति रखने के प्रस्ताव पारित किए। रोष प्रकट करने के लिए ९ सितंबर को नाभा दिवस मनाए जाने के लिए रोषमयी जुलूस निकालने, दीवान सजाकर रोष एवं हमदर्दी के प्रस्ताव पारित करके सरकार को भेजने, महाराजा के साथ इंसाफ हेतु अकाल पुरख के आगे प्रार्थना करने के लिए अपील की। अकाली जत्था रियासत नाभा द्वारा अलग-अलग स्थानों पर जुलाई एवं अगस्त के महीनों में दीवान करने का कार्यक्रम बनाया गया था। रियासत की एक प्रसिद्ध मंडी जैतो में भी २५, २६ तथा २७ अगस्त को दीवान किया गया, जिसमें आख़िरी दिन जब दीवान की समाप्ति हो रही थी तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठे ग्रंथी सिंघ ज्ञानी इंदर सिंघ मौड़ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। दीवान के प्रबंधकों ने इस बात पर रोष प्रकट किया तथा अनिश्चित समय के लिए दीवान को जारी रखने का एलान कर दिया। इस पर जो सज्जन दीवान की समाप्ति हो रही समझकर अपने गांव को वापिस जा रहे थे वे भी लौट आए तथा दीवानों का सिलसिला पुनः शुरू हो गया। पुलिस ने भी सख़्ती शुरू कर दी। पहले दीवान गुरुद्वारा गंगसर साहिब के बाहर सजा था, फिर गुरुद्वारा साहिब के अंदर लगने शुरू हो गए। दीवान में पुलिस द्वारा की गई ज्यादती की ख़बर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास पहुंची तो २५ सिंघों का एक जत्था भेजा गया। सिंघों ने गुरुद्वारा गंगसर साहिब के अंदर अखंड पाठों की लड़ी शुरू कर दी। १४ सितंबर को सरकारी कर्मचारियों ने बहुत ज्यादती की। अंदर मौजूद सभी सिंघों को गिरफ्तार कर लिया गया। पाठ कर रहे ग्रंथी भाई निरंजन सिंघ को भी घसीटकर एक तरफ करके गिरफ्तार कर लिया तथा एक सरकारी पाठी को पाठ करने लगा दिया गया। इस तरह पाठ खंडित हो गया। इस ख़बर ने सिक्ख संसार में भारी रोष पैदा कर दिया। जहां पहले महाराजा नाभा के साथ हुई बेइंसाफी के विरुद्ध दीवान किये जाते थे अब खंडित हुए पाठ के प्रायश्चित के रूप में इकोत्तर सौ अखंड पाठ किए जाने का कार्यक्रम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा निश्चित किया गया। सरकार सिंघों को गुरुद्वारा गंगसर साहिब के अंदर पाठ किए जाने से रोकती थी। इसके लिए 'जैतो का मोर्चा' शुरू हो गया।

१९२३ से १९२८ ई तक आपको देहरादून में रखा गया था। इसी अरसे के दौरान फरवरी, १९२७ ई में आपने अबिचल नगर, श्री हज़ूर साहिब की यात्रा की। वहीं दोबारा अमृत छका तथा अपना नाम 'रिपुदमन सिंघ' बदलकर 'गुरचरन सिंघ' रखा।

९ जुलाई, १९२३ ई तक अख़बार वाले तथा कौमी अगुआ, जो आपको मिलने के लिए नाभा जाया करते थे, वे भी देहरादून पहुंचने लग गये, जिनके द्वारा महाराजा का आम जनता के साथ भी संपर्क बना रहा। सरकार इस बात से दुखी थी। इस संपर्क को खत्म करने तथा महाराजा को इसकी सज़ा देने के लिए उसने ठोस कदम उठाये। महाराजा की पदवी ज़ब्त कर ली गई। गुज़ारे की रकम, जो तीन लाख रुपये सालाना थी, घटाकर एक लाख बीस हज़ार रुपए कर दी तथा देहरादून की जगह पंजाब तथा दिल्ली से बहुत ही दूर दक्षिण में मद्रास के इलाके में कोडाई कनाल नामक एक पहाड़ी स्थान पर पहुंचा दिया।

इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे लोग उनको भूलते गए। अख़बारों में भी उनकी चर्चा बंद हो गई। अंत में जलावतनी (देश निकाला) तथा गुमनामी की हालत में १९४२ ई में वे कोडाई कनाल में ही परलोक गमन कर गए।

शहीद भाई हकीकत सिंघ

*-सिमरजीत सिंघ**

पाकिस्तान के ज़िला सियालकोट की तहसील डसका में गलोटियां खुर्द नामक गांव आबाद है। यह गांव गुजरांवाला-सियालकोट मुख्य सड़क पर चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कश्मीर से वापिस आते हुए १६२० ई में एक वट वृक्ष तले विराजमान हुए थे। १६५९-६० ई में सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब ने भी अपने चरण-स्पर्श से इस गांव को निवाजा था। इस गांव के निवासी भाई नंद लाल जी ने गुरु साहिब की बहुत सेवा की। भाई नंद लाल जी के पूर्वज पहले कसूर में बसते थे। इस परिवार को गुरसिक्खी की दात प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से प्राप्त हुई थी। बाद में यह परिवार सियालकोट के गांव गलोटियां में आकर आबाद हो गया था। यहां पर भाई नंद लाल जी ने अपने पिता सहित श्री गुरु हरिराय साहिब जी से चरण पाहुल लेकर गुरसिक्खी जीवन धारण कर लिया। गुरु जी ने भाई नंद लाल जी को उपदेश देते हुए कहा कि कभी भी केशों का अपमान नहीं करना और न ही तम्बाकू का सेवन करना। भाई नंद लाल जी के घर दो पुत्रों-- भाई बाघ मल्ल तथा भाई भाघा मल्ल एवं एक पुत्री बीबी भागवंती ने जन्म लिया। इन्होंने इलाके में सिक्खी का प्रचार किया। ये दोनों भाई बहुत बार दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास श्री अनंदपुर साहिब कार-भेटा भी लेकर जाते रहे। भाई नंद लाल जी ने अपने दोनों पुत्रों की शादी महान सिक्ख भाई घनईया जी के पुत्र भाई लच्छी राम सिंघ की पुत्रियों-- बीबी कौरां तथा बीबी गौरां के साथ कर दी।

बीबी भागवंती की शादी प्रमुख सिक्ख परिवार में भाई शिव राम (कपूर) से वज़ीराबाद में कर दी। इनके घर पुत्री साहिब कौर तथा पुत्र साहिब सिंघ का जन्म हुआ। बीबी साहिब कौर की शादी बाबा बंदा सिंघ बहादर से हुई थी।

भाई बाघ मल्ल सरकारी कार्यालय में नौकरी करने लग गए। इनके घर बीबी कौरां की कोख से एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम हकीकत रखा गया।

भाई अगरा सिंघ (सेठी) वार हकीकत राय में लिखते हैं :

वार हकीकत धरमी दी वासी सिआलकोट विच आइआ।
हकीकत राइ दी सुणो जिस इह धरम रखाइआ।
थित दुआदसी कतक मासे अंम्रित वेले छाइआ।
क्रिशन पख ने राति अंधेरी माता कौरां जाइआ।
अगरा बाग मल घर जनम लीआ, पर सिआल कोट विच आइआ।

उपरोक्त सूचना के अनुसार भाई हकीकत सिंघ का जन्म कार्तिक वदी द्वादशी, संवत् १७७३ बिक्रमी के अनुसार २२ सितंबर, १७१६ ई को शनिवार के दिन हुआ। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की पत्नी बीबी साहिब कौर भाई हकीकत सिंघ की भूआ की पुत्री (बहन) थी।

भाई हकीकत सिंघ को विद्या-प्राप्ति हेतु सियालकोट की एक मसजिद में भेजा जाता था।

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश*

यह मसजिद खुसरों की गली में थी। इस मसजिद का मौलवी अब्दुल हक्क था। भाई हकीकत सिंघ की उम्र उस समय ७ वर्ष थी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

सत्तां बरसां दा होइआ धरमीं मुलां दे पढ़ने आइआ।
रोक रुपईआ गुड़ दी रोड़ी मुलां दी नज़र टिकाइआ।
बाग मल्ल सौंपिआ मुलां नूं बेटा कर बुलाइआ।
कहुजी दोस किसे नूं किआ कोई देवे, जां होणी दसत उठाइआ।

बटाला में भाई किशन सिंघ, भाई डल्ल सिंघ तथा भाई मल्ल सिंघ तीन भाइयों का परिवार बसता था। ये तीनों भाई स. बुद्ध सिंघ बटालिया से खंडे की पाहुल प्राप्त कर सिंघ सजे थे। इस घराने में भाई हकीकत सिंघ के ताऊ भाई भाग मल्ल का पुत्र बटाला निवासी भाई मल्ला सिंघ की सपुत्री बीबी नोभी उर्फ अनोखी से ब्याहा हुआ था। बीबी नोभी ने अपने चाचे किशन सिंघ की पुत्री (बहन) नंदी उर्फ दुरगा के रिश्ते की बात भाई हकीकत सिंघ से करने के बारे में दोनों परिवारों में बातचीत चलाई।

भाई हकीकत सिंघ की शादी छोटी उम्र में ही भाई क्रिशन सिंघ (उप्पल) की पुत्री बीबी नंद कौर (नंदी) से हुई। कई इतिहासकारों ने नाम दुरगा भी लिखा है। भाई अगरा सिंघ (सेठी) इस सम्बंधी लिखते हैं :

अट्ठां बरसां का होइआ धरमी करदा बहु चतुराई।
डल्ल सिंघ, मल्ल सिंघ, किशन सिंघ त्रै भाई।
उपल जात बटाले वासी, भेजी उस कुड़माई।
त्रै लागी समन लिआए, भट्ट प्रोहत नाई।
शादी होई नारी गावण, आ के देण वधाई।

आप जी की शादी सम्बंधी पंथ प्रसिद्ध इतिहासकार ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

मल सिंघ दल सिंघ किशन सिंघ थे खत्री तीनो भाई।
उप्पल गोत बटाले वसदे सुता किशन सिंघ जाई।
दुरगा नाम ताहिका रखयो होई जबै सिआनी।
शादी राइ हकीकत संगैं तिसकी भई महानी।
चाचे ताए बाप तहि के थे हठीए सिंघ भारे।

आप जी के घर एक पुत्र स. बिजै सिंघ ने जन्म लिया। ज्ञानी गिआन सिंघ के द्वारा रचित 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

तब लो पड़िओ फारसी अरबी इक सुत पैदा कीओ।
उमर अठारां दी विच जून रंगीला थीओ।

भाई हकीकत सिंघ तीक्ष्ण बुद्धि के मालिक थे। वे अपनी विद्वता का लोहा अपने सहपाठियों व अध्यापकों को मनवा चुके थे। एक बार सियालकोट के शाही काजी मौलवी अब्दुल हक्क को भी बहस में निरुत्तर कर चुके थे। 'पंथ प्रकाश' के कर्ता ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं :

उसी जमाने मैं भये सिआलकोट के मांहि।
बेटा खत्री का भलो राइ हकीकत आहि।
पढत मोलवी ढिग हुत्तों, बहुत भयो हुशिआर।
इक दिन काज़ी सों भई बहिस दीन की डार।
ला जवाब काजी करायो जब लड़के ने नीक।
(पंथ प्रकाश, छाप पहली, अध्याय ३२, पृष्ठ ३३२)

एक बार उनके साथ कुछ मुसलमान विद्यार्थियों ने अपमानजनक शब्दों में बात की। भाई हकीकत सिंघ ने उनको समझाया कि किसी भी धर्म के प्रति अपमानजनक शब्द नहीं बोलने चाहिए। अगर कोई मुसलमान धर्म के प्रति इस तरह के शब्दों का प्रयोग करेगा तो आपके दिल पर क्या गुज़रेगी? मुसलमान विद्यार्थियों ने उनके इस सुझाव को चुनौती के रूप में लिया। उन्होंने इन पर दोष लगा दिया कि ये मुसलमान धर्म के प्रति गलत बयान करते हैं। झगड़ा बहुत

ज्यादा बढ़ गया। भाई हकीकत सिंघ द्वारा दिए गए सुझाव को इसलाम धर्म के प्रति अपमान मानकर (झूठा) दोषी ठहरा दिया गया। पहले यह सारा मामला उसताद सुलेमान खां ने काज़ी अब्दुल हक्क के पास पहुंचा दिया। काज़ी द्वारा की गयी पूछताछ में भाई हकीकत सिंघ ने उसको निरुत्तर कर दिया। ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में इसके बारे में बताते हैं :

होइ निरुत्तर शरमिंदे वहि काजी पास पुकारे।
काजी पाजी जालम खां ढिग हाकम गयो शकारे।
चुगली उगली दुगली के बहु सच्ची झूठी ला कै।
नाम अमीर बेग था हाकम तिस सो मता पका कै।
सद्द हकीकत रा को भाखयो तुम गुनाह किय भारी।
हमरै पैगंबर की बेटी को तैं दीनी गारी।

काज़ी ने उस समय के शासक सियालकोट के प्रबंधक काज़ी अमीर बेग के पास पेश कर दिया। काज़ी ने भाई हकीकत सिंघ को फांसी की सज़ा सुना दी। काज़ी के फैसले के उपरांत सिपाही भाई हकीकत सिंघ को गिरफ्तार करके लाहौर की ओर चल दिए।

लाहौर जाते समय ये पहली रात डसके नगर में ठहरे। डसके शहर के मुखिया, ओहदेदार भाई हकीकत सिंघ के पिता की बहुत इज्जत करते थे। डसके के मुखिया रूप चंद ने काज़ी को समझाने की बहुत कोशिश की, किंतु उसने उसके आगे लाहौर के काज़ी फतहि बेग का डर पेश किया। अगली रात ऐमनाबाद में बितायी। अगले दिन ऐमनाबाद से चलकर इस काफ़िले ने रास्ते में शाह दउले के पुल पर कुछ समय आराम दिया। शाह दउले के मकबरे के मजाउरों ने भी भाई हकीकत सिंघ को छुड़ाने की बहुत कोशिश की। अगली रात यह काफिला फज़लाबाद पहुंच गया। फज़लाबाद के फौजी अफ़सर कसूर बेग ने भी मौलवी अब्दुल हक्क को इस तरह का पाप करने से रोका। चौथी रात काफ़िला लाहौर के पास शाहदरे पहुंच गया। यहां के मुखिया धर दरगाही ने भी काज़ी को मनाने की बहुत कोशिश की किंतु वह नहीं माना। आखिर पांचवे दिन भाई हकीकत सिंघ का यह सारा मामला लाहौर के हाकिम जकरिया ख़ान की अदालत में पेश किया गया। जकरिया ख़ान ने भाई हकीकत सिंघ को इसलाम धर्म धारण करने अथवा मृत्यु कबूल करने के लिए कहा। 'पंथ प्रकाश' के कर्ता ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार :

नहीं तु दीन कबूल हमारा जे चाहित हैं जीओ।

भाई हकीकत सिंघ ने काज़ी से जो पूछा उसके बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं कि :

इसी बात पर बहिस भयो फिर कहयो हकीकत राने।
किसी किताब शरा विच नाहीं जो तू सुकस बखाने।

दीवान सूरत सिंघ, स. जगत सिंघ तथा जंबर गांव के रहने वाले कोतवाल स. सुबेग सिंघ आदि ने भी भाई हकीकत सिंघ को छुड़ाने के लिए पूरा ज़ोर लगाया, किंतु सब असफल रहे।

भाई हकीकत सिंघ ने अपना धर्म छोड़ने से इंकार करते हुए मृत्यु की सज़ा को कबूल किया :

तब तिस काज़ी दुषट ने मिल हाकमा सो ठीक।
करना चाहिओ तुरक तह लड़के मानयो नांहि।

भाई हकीकत सिंघ को डराने-धमकाने के लिए कई प्रकार की यातनायें व लालच दिए गए, किंतु भाई साहिब किसी भी तरह से अपना धर्म त्यागने के लिए न माने :

सिरर तजओनह, सिर दयो तब बालक ने चाहि।

भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार भाई हकीकत सिंघ ने जवाब दिया :

हकीकत राइ मुख बचन जो कीता, फिरसी होर जमाना।
न रहे कचहिरी ज़ालम दी, न रहे अमीर दिवाना।
काज़ी मुलां कोई न रहि सी, पढ़ पढ़ गए कुरानां।
निमाज़ वी रोज़े कोई ना रखसी, साबत जिस ईमानां।
सतिर बीबीआं सभ छड्ड जासन, अगद भी नाल गुलामां।
हकीकत कहे खालसा होइआ, फिर बोलण फतह दमामां।

लाहौर के हाकिम द्वारा पहले भाई हकीकत सिंघ को कोड़े (चाबुक) मारने का हुक्म दिया गया। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

बधे ने हकीकत राइ नूं, इक नाल थम दे कड़िआ।
चोभां देवण नाल करद दे, कोटड़िआं मूंह धरिआ।
तोबा तोबना बोले मूंह थीं, ना सवाल रब्ब करिआ।
कहु जी धंन हकीकत दा हीआ, जिस दुख हडां विच जरिआ।

भाई हकीकत सिंघ की शहादत का एक कारण उनके मामा भाई अरजन सिंघ सियालकोट का इनके पास आना-जाना भी माना जाता है, क्योंकि जकरिया ख़ान ने यह एलान किया हुआ था जिसके बारे में भाई रतन सिंघ (भंगू) 'प्राचीन पंथ प्रकाश' में ज़िक्र करते हैं :

जो सिंघन कौ कोऊ लुकावै।
सो वहि आपनी जान गवावै।
आए सिंघ बतावै नांही,
वै भी आपनी जिंद गुवाही।
जो सिंघन को साक करेवै,
मुसलमान सो होवन लेवै।
जो सिंघन कौ देवै 'नाज'।
मुसलमान करों तिस काज ॥४॥
दोहरा ॥
ऐसी ऐसी घूर कर दीनै लोक डराइ।
कईअन को सिरो पाउ दै दीनै विचों पड़ाइ।

भाई अरजन सिंघ पहले मुहम्मद शाह रंगीले का फौजदार था। जिस समय सरकार द्वारा सिंघों को बागी एलाना गया तो यह नौकरी छोड़कर सिंघों के जत्थे में जा मिला। यह बहुत बहादुर था। एक बार जब रंगीले ने इसे काबुल जाने का हुक्म दिया था तो यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ध्यान धरकर दरिया अटक में ठेल पड़ा था तथा दरिया पार कर गया था।

भाई हकीकत सिंघ की गिरफ्तारी के समय भाई अरजन सिंघ अपनी बहनों के पास सियालकोट आया हुआ था। किसी ने इसकी मुख़बरी कर दी। इसको भी गिरफ्तार कर लाहौर लाया गया था।

भाई हकीकत सिंघ तथा उनके मामा भाई अरजन सिंघ को ७ दिन तक नज़रबंद रखा गया। आठवें दिन बसंत पंचमी के दिन पेशी हुई। शाही काज़ी, अन्य मुल्लां तथा मुफतियों को साथ लेकर नाज़िम की कचहरी में आ गया तथा शोर मचाने लग गया। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

अठ्ठ दिहाड़े जब गुजरे काजी ने गिला कराइआ।
पंच हज़ार ले पंज सौ मुलां 'मुफ्ती' काजी लिआइआ।
आइ कचहिरी सोर कीतोओने, दब दबाउ बहु पाइआ।
मुगलां देह जवाब तूं शर्हा न मंने, सभनां मरना पाइआ।
खान बहादर कंब गिआ फिर दिल ते गुसा

आइआ।
अमीर बेग नूं झिड़क दित्ती अमीरां नूं दीवान वेख डराइआ।
विच कचहिरी खौफ पिआ कोई नेड़े मूल ना आइआ।
कहु जी सदु पई हकीकत नूं मारन नूं मंगवाइआ।

भाई हकीकत सिंघ व भाई अरजन सिंघ दोनों मामा-भानजा ज़ंजीरों में जकड़े हुए नाज़िम की कचहरी में खड़े थे। दोनों को इसलाम कबूल करने या मरने के लिए तैयार होने के लिए कहा गया।

आखिर १८ वर्ष की उम्र में बसंत पंचमी के दिन भाई हकीकत सिंघ तथा भाई अरजन सिंघ को लाहौर के नखास बाज़ार में शर-ए-आम कत्ल करके शहीद कर दिया गया। ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

इम कहि तुरिओ साथ जलादन चौक निखास मझारे।
नमशकार सबही को कर कै बैठो पंथी मारे।
तेग मार सिरबेग उतारयो इक जलाद ने तबही।
हा हा कार भर गयो धरनभ रोई खलकत सबही।

शहादत पर आने से पहले आपने सुंदर दसतार सजायी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

चार घड़ी फिर सतिगुर सिमरिआ, सिर पर चीरा धरिआ।

इनका दाह संस्कार मोज़ा कोट ख़्वाज़ा सय्यद (खोजे शाही) के पूरब में बाग-बानपुरा से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर दीवान सूरत सिंघ, स. जगत सिंघ तथा स. सुबेग सिंघ द्वारा किया गया।

भाई हकीकत सिंघ की पत्नी बीबी नंद कौर अपने परिवार सहित शहीदी वाले दिन लाहौर के नखास चौक में थी। उसने अपनी आंखों देखी घटना अपने पिता भाई किरपाल सिंघ को बताई। भाई किरपाल सिंघ ने सारी घटना का विवरण खालसा दल के मुखिया नवाब कपूर सिंघ को काहनूंवान के छंब में जाकर सुनाया।

खालसा दल ने भाई हकीकत सिंघ को शहीद करवाने वाले ज़ालिम हाकिमों का नाश करने का फैसला कर लिया। ज़ालिम हाकिमों को खत्म करने के लिए सियालकोट शहर पर चढ़ाई कर दी। सियालकोट के नज़दीक तीस कोस की दूरी पर खालसाई फौज ने डेरा लगा लिया। सारे जंगी ज़ायजे लेकर तैयारी कर ली। अगले दिन सियालकोट पहुंचकर एक नाले के किनारे सिंघों ने तेगें खड़काकर ज़ालिमों के रक्त की नहरें बहा दीं। भाई दल सिंघ ने अपनी तेग से अब्दुल हक्क तथा हाकिम अमीर बेग का सर धड़ से अलग कर दिया।

बाद में सियालकोट तथा लाहौर में भाई हकीकत सिंघ और भाई अरजन सिंघ शहीदों की यादगार कायम हो गयी, जहां जुड़कर संगत नाम-सिमरन करने लगी। भाई अगरा सिंघ (सेठी) के अनुसार :

शबद अनाहद पढ़न रबाबी, इंदर छाण कराए।
मद्रग कैंसीआं छैणे वज्जण, संगतां शंख वजाए।

लाहौर के इस इलाके को शाह बहिलोल भी कहा जाता है। यादगार के बिलकुल पास ही नवाब जकरिया ख़ान की माता बेगम जान, पत्नी बाहू बेगम, पुत्र यहीआ खां तथा उसका खुद का मकबरा बना हुआ है।

पहले इस यादगार पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हुआ करता था। महाराजा रणजीत सिंघ ने इस यादगार की सेवा-संभाल के लिए दो गांव-- सलैर व लालेवाली माफ़ी लगवाए थे, जिनसे ४०० रुपये वार्षिक रकम वसूल होती थी। महाराजा रणजीत सिंघ ने

इसकी सेवा-संभाल के लिए एक निहंग सिंघ भाई शेर सिंघ को लगाया था। आगे इस ख़ानदान के भाई सरूप सिंघ, भाई काहन सिंघ तथा भाई निहाल सिंघ सेवा-संभाल करते रहे। ये दोनों गांव अंग्रेज सरकार ने ज़ब्त कर लिए थे। अन्य गांवों से २०० रुपये वार्षिक जागीर मिलती रही। इस जागीर के अलावा इस यादगार के नाम ३० बीघे ज़मीन भी थी, जिसमें कूप लगा हुआ था। १९४७ ई देश के विभाजन के बाद यह स्थान पाकिस्तान में चला गया। आजकल भाई हकीकत सिंघ की यादगार लगभग खत्म हो चुकी है।

भाई हकीकत सिंघ की शहादत के बाद इनकी माता चिखा में से राख निकालकर सियालकोट ले गयी तथा अपने पुत्र की याद में यादगार कायम की। इस स्थान की सेवा-संभाल कान-फटे योगी करते हैं। इन योगियों का भाई हकीकत सिंघ के परिवार में काफी आना-जाना था। यहां पाकिस्तान बनने से पूर्व लाहौर तथा सियालकोट की यादगारों पर बसंत पंचमी वाले दिन भारी जोड़ मेला लगता था।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य काल के समय बसंत पंचमी का मेला लाहौर के शालामार बाग के नज़दीक होता था। इस दिन भारी संख्या में संगत भाई हकीकत सिंघ की यादगार पर श्रद्धा-सुमन भेंट करने जाती थी। महाराजा रणजीत सिंघ के अहिलकार भी इस दिन पीले कपड़े पहनकर मेले में जाते थे। दिल खोलकर दान भी किया जाता था।

भाई हकीकत सिंघ के शहीद हो जाने के पश्चात उनकी पत्नी बीबी नंद कौर अपने मायके गांव बटाला आ गयी। इस तरह भाई बिजै सिंघ अपने ननिहाल में ही पला। बीबी नंद कौर ने अपनी सारी उम्र बटाले में ही गुज़ारी। यहां के लोग उसे भूआ नंदी कहकर बुलाते थे। इसने बटाला में एक कूप भी खुदवाया जो अब तक भूआ नंदी के कूप के नाम से जाना जाता है। यह कूप बाज़ार कादियां कूचा उप्पलां में है। जिस उप्पलों के मोहल्ले में बिजै सिंघ बटाले में रहता था, वह मोहल्ला उजाड़ दिया गया। उप्पलां का मोहल्ला अभी भी बटाला में है, किंतु उप्पल वहां से चले गए हैं। अख़बार फ़तिह के १८ सितंबर, १६३५ ई के अंक के अनुसार स. किशन सिंघ के वंश में से उसका एक घर बटाला से ७ मील दूर सुचानियां गांव में आबाद है। बीबी नंद कौर की यादगार बटाला में उप्पल खत्रियां के शमशान घाट में बनी हुई है, जिसको लोग भूआ नंदी की यादगार से याद करते हैं। भाई बिजै सिंघ की शादी जलालपुर जट्टां ज़िला गुजरात (अब पाकिस्तान) गांव के निवासी भाई बख़तमल्ल (सूरी) की पोती तथा भाई सूरत सिंघ (सूरी) की पुत्री जै कौर से हुई। भाई बिजै सिंघ भी अपने पिता की तरह जवानी में ही देश-धर्म के लिए शहादत प्राप्त कर गया था।

स्रोत पुस्तकें :

१) भाई अगरा सिंघ (सेठी) : हकीकत राए दी वार
२) ज्ञानी करतार सिंघ : सिदक खालसा
३) बिहारी लाल : हकीकत चरित्र (हिंदी)
४) स. गुरमुख सिंघ : ज्ञानी गरजा सिंघ दी इतिहासिक खोज
५) डॉ. गंडा सिंघ : पंजाब दीआं वारां
६) भाई कान्ह सिंघ नाभा : महान कोश
७) डॉ रतन सिंघ (जग्गी) : सिक्ख पंथ विशव कोश
८) ज्ञानी गिआन सिंघ : तवारीख गुरू खालसा
९) स. रछपाल सिंघ : पंजाब कोश

नानक तिना बसंत है . . .

-डॉ. शमशेर सिंघ*

गुरबाणी में दिन, वार, तिथियां, ऋतुएं, महीनों का ज़िक्र आया है तथा इनके माध्यम से मनुष्य को आत्मिक ज्ञान प्रदान किया गया है। यहां कुदरत का वर्णन किसी प्रकार की सगुण पूजा नहीं है बल्कि कुदरत में कादर का जलवा देखकर मनुष्य की अंदरूनी विस्माद अवस्था का निरूपण किया गया है। कुदरत का आनंद मन को प्रेरणा देने वाला बताया गया है। यहां हमने मात्र बसंत ऋतु का वर्णन करना है। गुरबाणी में बसंत ऋतु मानव के आत्मिक आनंद से सम्बंधित है।

मानवीय जीवन का उद्देश्य आत्मिक आनंद प्राप्त करना है। यह प्राप्ति नाम-सिमरन द्वारा हो सकती है, अन्य किसी कर्म अर्थात् तप, तीर्थाटन आदि कर्मों के कमाने से नहीं। इस तरह बसंत का समय आने पर प्रकृति में हरियाली, सुगंधी एवं बहार आती है। इसी तरह नाम जपने वाला मनुष्य सदैव बसंत की तरह खिला रहता है। संगत में गुरु का उपदेश कमाने वाला साधक तो हमेशा ही आत्मिक आनंद में रहता है। बसंत ऋतु वर्ष में केवल दो महीने ही रहती है, जबकि नाम सिमरने वाला जीव सब ऋतुओं में खिला रहता है। उसके आत्मिक आनंद से अभिप्राय प्रभु का असल चिंतन होता है। प्रभु सदा बसंत की भांति अर्थात् सदा खिला रहता है। गुरबाणी का उद्देश्य मुरझाए हुए मनों को पुन: खिलाना और उनके अंदर प्यार की सुगंध पैदा करना है :

माहा रुती महि सद बसंतु ॥
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ (पन्ना ११७२)

बसंत ऋतु प्रकृति में हर तरफ से आनंद लेकर आती है। यह आनंद मनुष्य के लिए एक प्रेरणा है जो मनुष्य अहं के कारण प्रभु से दूर होकर आत्मिक सूखे का मारा हुआ होने के कारण आत्मिक पक्ष से मुरझाकर निराश हो गया है। गुरमुखों की संगत करके वह पुन: हरा-भरा हो सकता है। गुरबाणी का यही मंतव्य है कि मनुष्य का यह मन हर्षित हो जाए। गुरबाणी सीधे तौर पर मनुष्य की आत्मिक जागृती से सम्बंधित है। गुरबाणी में बसंत ऋतु को मुबारकबाद कहा गया है, क्योंकि इसके द्वारा मनुष्य को एक ऐसी आंतरिक प्रेरणा मिलती है कि वह प्रभु-नाम में रंगा हुआ रहने के लिए विह्वल होता है। मनुष्य आध्यात्मिक पक्ष पर चलने से ही अंदर से हर्षित हो सकता है :

-- *बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥*
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥(पन्ना ११७६)
-- *मउली धरती मउलिआ अकासु ॥*
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥
(पन्ना ११९३)

गुरमुखों की संगत मनुष्य के हृदय में नाम की लगन पैदा करती है। नाम-सिमरन से ही मन में आनंद व व्यवहारिक जीवन में हुल्लास आता है। प्रभु की ज्योति का अत: करण में अनुभव करने से ही मानव जीवन में आनंद (बसंत) आ सकता है। संसार के जीव तृष्णा की अग्नि में जलकर नष्ट हो रहे हैं। उनके मन में समाए माया के भ्रमों एवं दुविधाओं ने जीवन को रूखा तथा शुष्क कर रखा है। यह ऋतु अर्थात् यह मानव जीवन का समय नाम

*गांव व डाकखाना : शेखूपुरा, ज़िला : पटियाला-१४७००१

जपने तथा हरे-भरे होने अर्थात् आनंद प्राप्त करने का है। गुरबाणी आत्म-मार्ग है, जो बाहर के भटकाव का त्याग करने के लिए ही बराबर प्रेरणा दे रही है। मन में जब विचारों का अंत हो जाता है तो सुरति नाम-सिमरन में टिक जाती है। फिर बसंत की ऋतु में सदीवी आनंद, जो अमृत फल की तरह होता है की प्राप्ति होती है। यह आनंद सदाबहार, सदीवी हर्ष की भांति होता है। मनुष्य अपनी कमज़ोरियों से मुक्त होकर दैवी गुणों का मालिक बन जाता है। गुरु साहिबान वाहिगुरु को अनुभव करके अपनी पावन बाणी द्वारा सूखे हुए सांसारिक लोगों को हरा-भरा करने के लिए उपदेश दृढ़ करवा रहे हैं :

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥
करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥
वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥
मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥
नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥
(पन्ना ११९३)

प्रकृति का आनंद तो सब हरि के आनंद के कारण ही है। हरि तो सदैव खिला रहता है। बसंत ऋतु के आनंद से हमें हरि की याद आनी चाहिए, लेकिन हम हरि को औपचारिक रूप से पाठ-पठन द्वारा ही याद करते हैं। प्रभु के साथ मिलाप शारीरिक नहीं, आत्मिक होता है। यही मिलाप आत्मिक आनंद का साधन है। इसी साधन द्वारा ही आंतरिक-आत्मिक शौहर (परमात्मा) का निवास मिल सकता है :

--पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥
जित मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥
--नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥
(पन्ना ७९१)

गुरबाणी आत्म-जिज्ञासुओं को बाहरी आनंद तथा बाहरी मिलाप से ऊपर उठाकर आंतरिक-आत्मिक मिलाप के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। इसके अनुभवी वचनों ने बहुत सारे लोगों को बाहरमुखता से आंतरिकमुखता की ओर प्रेरणा की है। आंतरिक-आत्मा का मिलाप कभी वियोग का कारण नहीं बनता :

मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ७९१)

प्रभु बसंत ऋतु से पहले का है अर्थात् सदैवकालीन है। वही पहला खिला हुआ है। उसके खिलने से ही सारी सृष्टि खिलती है। प्रभु के खिलने का कारण कोई अन्य शक्ति नहीं है, वह अपने आप से ही खिलता है तथा सारी प्रकृति में आनंद का कारण भी वही है। गुरु साहिब उपदेश करते हैं कि उस प्रभु के गुणों की विचार करो जो हमेशा खिला रहता है। उस प्रभु का सिमरन करना चाहिए जो सब का सहारा है। सारा जगत उसके सहारे आनंदित होता है। गुरु साहिब ने बसंत ऋतु का आत्मीकरण किया है। जिन जीव-स्त्रियों का प्रभु-पति उनके हृदय रूपी घर में बसता है, उनके लिए सदैव बसंत है, उनके हृदय में हमेशा आनंद है। जिनके पति घर पर नहीं, परदेस गए हुए हैं अर्थात् जिनके हृदय में वाहिगुरु नहीं बसा, उनके लिए हमेशा पतझड़ है, निराशा है।

गुरबाणी ने कुदरत में कादर का जलवा देखने तथा इसको प्यार करने का उपदेश दिया है। कुदरत के आनंद से मनुष्य की मानसिक अवस्था में जो विकास की भावना है, उसका प्रकटावा किया है। यह प्रकटावा अलग-अलग ऋतुओं के वर्णन के साथ-साथ, आत्मिक आनंद, संतुष्टि तथा प्रेरणा का स्रोत है। कुदरत को देखने-वाचने के उपरांत मन की स्थिरता एक अहम प्राप्ति है।

केशों की महानता

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

दुनिया में जहां कहीं भी गुरु, पीर, फ़कीर, ऋषि, मुनि, साधु, संत, भक्त हुए हैं, वे सभी केशधारी, साबत सूरत वाले हुए हैं। वे अपने कर्म-व्यवसाय, नाम-सिमरन में तल्लीन तो रहते ही थे, साथ ही अपने प्राकृतिक स्वरूप की संभाल भी किया करते थे। वे केशों को नहीं काटते थे। वे सभी केशों के महत्त्व तथा उपयोगिता से भली-भांति परिचित थे। जब भी कोई बच्चा पैदा होता है तो केश लिए ही पैदा होता है, फिर बड़ा होने पर सिर के केश, दाढ़ी-मूंछ वगैरह काटकर या कटवाकर वाहिगुरु द्वारा दी गई साबत सूरत को क्यों बिगाड़ा जाए? बालों में शक्ति होती है। इस बात को स्वास्थ्य-विज्ञान (मेडिकल साइंस) ने भी सिद्ध किया है।

सिक्खों में रहित मर्यादा के तहत केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कछहिरा इन पांच ककारों का बहुत महत्त्व है। केश शक्ति व ताकत का प्रतीक हैं। कंघे से केशों को संवारा जाता है। जब केशों में कंघा फेरा जाता है तो एक विशेष किस्म की ऊर्जा पैदा होती है। इस ऊर्जा का संचार सिर से लेकर पांव तक पूरे शरीर में होता है। यह अनुभव की बात है।

लोहे से बना कड़ा पहनने से भी शरीर को बहुत लाभ मिलता है। लोहे के कड़े द्वारा शरीर के साथ रगड़ खाते रहने से नये लाल रक्त-कणों का निर्माण होता रहता है। जो लोग लोहे के बर्तनों में भोजन पकाते हैं, खाते हैं, उन्हें कभी खून की कमी नहीं होती। वे एनीमिया का शिकार नहीं होते हैं।

कृपाण धारण करने से आत्मविश्वास बढ़ता है; अपनी व अन्य की मुश्किल समय में सुरक्षा करने की भावना सुदृढ़ होती है। कृपाण अन्याय, जुल्म, अत्याचार के विरुद्ध जूझने का, रण-क्षेत्र में धर्म की खातिर कुर्बान होने का जज़्बा पैदा करती है। कृपाणधारी सिक्खों को सदैव सत्कार मिला है और मिलता रहेगा। जिस पर वाहिगुरु की विशेष कृपा हो, उसे ही कृपाण धारण करने का मौका मिलता है। 'कृपाण' शब्द कृपा+आन से बना है।

कछहिरा केवल नंगेज़ ढंकने का वस्त्र मात्र नहीं है, यह तो जत्-सत् का प्रतीक है। यह उच्च आचरण, सदाचार का प्रतीक है। कछहिरा हमें उच्च आचरण, सदाचार हेतु जत्-सत् देता है, शक्ति देता है, प्रेरणा देता है। पांच ककारों में इसका खास महत्त्व है।

पांच ककारों में ही केशों का भी खास महत्त्व है। हमने केशों की शक्ति व ताकत की बात की है। यह बात बिलकुल सही सिद्ध हो चुकी है। केश काटने या कटवाने से शरीर में फास्फोरस की कमी हो जाती है। इस कमी को पौष्टिक आहार या दवाओं द्वारा पूरा करना पड़ता है। जैसे-जैसे केश काटे जाते हैं, तैसे-तैसे पुनः बढ़ने में फास्फोरस की काफ़ी खपत हो जाती है। अगर बालों को न काटा जाए तो इसकी कमी नहीं होती है। शरीर में प्रोटीन, कैल्शियम और शर्करा पचाने के लिए फास्फोरस का होना बहुत ज़रूरी होता है। हमारा शरीर फास्फोरस का इस्तेमाल इसके संयुक्त तत्वों के रूप में करता है। ये तत्व हमें दूध, पनीर, सभी अनाजों, सूखे मेवों आदि से प्राप्त होते हैं।

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो ९८७२२-५४९९०*

फास्फोरस की कमी से शरीर का वज़न कम हो जाता है, खून की कमी हो जाती है और शरीर का पूर्ण व सही विकास नहीं हो पाता है। इससे पता चलता है कि फास्फोरस हमारे लिए बहुत जरूरी है और केशों का रखरखाव उससे भी जरूरी है।

केशों से और सिर पर सजी दसतार से सिक्ख पूरी दुनिया में अपनी अलग व विशेष पहचान बनाए हुए हैं तथा शान से सरदार कहलाते हैं। हां, कुछेक विदेशी मुल्कों में सियासत व भेदभाव से ग्रस्त होकर सिक्खों की अलग पहचान के बारे में भ्रांतियां पैदा की जा रही हैं। हमें विचलित नहीं होना चाहिए बल्कि अपने सिक्खी स्वरूप को कायम रखने के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। यही सिक्खी की महान परंपरा रही है। हमारी अलग व विशेष पहचान ही हमारी गौरवशाली विरासत है। सिक्खी सदाचार से, परोपकार की भावना से भरपूर फलसफा है; जीने का और हंसते-हंसते सिक्खी-उसूलों, सिद्धांतों के लिए कुर्बान होने का एक विशेष अंदाज़ है, ढंग है। यूं ही तो नहीं कहा गया-- *"केश गुरु की मुहर हैं।"* सिक्खों का प्रथम उसूल ही केशों की हिफाज़त करना होता है। हमें पतित होने से बचना चाहिए तथा साबत सूरत बनना चाहिए। अनेक शहीदों ने शहादत देकर सिक्खी की आन, बान और शान को कायम रखा है। प्रतिदिन उन शहीदों को अरदास करते समय याद किया जाता है :

"जिन्हां सिंघां सिंघणीयां ने धरम हेत शीश दित्ते, बंद-बंद कटाए, खोपरीआं लुहाईआं, चरखड़ीआं 'ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए, गुरदुआरिआं दी सेवा लई कुरबानीआं कीतीआं, धरम नहीं हारिआ, सिक्खी केसां सवासां संग निभाई, तिन्हां दी कमाई दा धिआन धरके खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु।"

वाहिगुरु के आगे केशों का दान मांगते हुए अरदास की जाती है :

"सिक्खां नूं सिक्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान, नाम दान, श्री अंम्रितसर जी दे खुले दरशन दीदार, चौंकीआं, झंडे, बुंगे जुगो जुग अटल, धरम का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु।"

प्रत्येक ककार स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। एडमंड कैडलर कहते थे कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हिंदोस्तान में पहले मनोविज्ञानी गुरु हैं, जिन्होंने हर चीज़ का एवं खासकर स्टील का सही इस्तेमाल सिक्खों को सिखाया है। गुरु जी का पांच ककार रखने का सिक्खों को आदेश देना वक्त की ही जरूरत नहीं थी, बल्कि हर समय के लिए एक जरूरी अंग है। केशों का सीधा संबंध जत्थेबंदी के पक्ष के साथ है। केशों ने सिक्खों की जत्थेबंदी को बचाए रखा है और अब तक बचाए आ रहे हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने केश एक ऐसी कसौटी के रूप में बताए हैं, जिससे पता चल जाता है कि कौम में कहां व कितनी कमी हो रही है। केशों से ही हमारी जत्थेबंदक एकता कायम है। केशों को खूबसूरती का आखिरी चिन्ह कहा गया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने केशों की संभाल करना जरूरी बतलाया है। जिस स्थान पर खालसा की साजना की, उस स्थान को 'केसगढ़' (केशगढ़) कहा जाता है। केशों का सत्कार न करने वाला पूर्ण सिक्ख नहीं हो सकता। पूर्ण सिक्ख वही है, जो केशों का सत्कार करे।

कुछ गैरसिक्ख स्त्री-पुरुष अपने सिर के बालों के बल से ट्रक, बस, रेलइंजन, हवाई जहाज़ आदि खींचकर इनकी ताकत का प्रदर्शन करते रहते हैं। जिनके सिर पर बाल न हों, वे स्त्री-पुरुष इनके लिए तरस जाते हैं और कई तरह के इलाज इन्हें पाने (उगाने) हेतु करवाते हैं।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की चरण-स्पर्श प्राप्त
गुरुद्वारा कोठा साहिब, वल्ला

-स. बिक्रमजीत सिंघ*

सिक्ख गुरु साहिबान ने अपने-अपने जीवन काल के दौरान जहां-जहां भी चरण डाले वह धरती सर्वदा के लिए सौभाग्यवान हो गई। जंगली एवं वीरान इलाके पावन धार्मिक स्थान बनने के साथ-साथ शहरों, कसबों आदि में तबदील हो गए। बंजर जमीनें पुन: हरियाली से ओत-प्रोत होकर समूची मानवता के लिए वरदान बन गईं। गुरबाणी में फरमान है :

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ *(पन्ना ३१०)*

वह धरती सदा के लिए पूजने योग्य हो गई, जहां किसी गुरु साहिब ने सिक्खी के प्रचार-भ्रमण के दौरान पड़ाव किया। सिक्खों ने उस स्थान पर यादगार के रूप में गुरुद्वारा साहिबान स्थापित कर दिया।

इसी संदर्भ में जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को भाई मक्खण शाह ने 'बकाला' गांव की धरती पर 'गुरु लाधो रे' का नारा बुलंद कर संगत में 'नवम् गुरु' के रूप में प्रकट किया तो इसके उपरांत श्री गुरु तेग बहादर साहिब 'बकाला' गांव से भाई मक्खण शाह और अपने कुछ अन्य सिक्खों के साथ श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन-दीदार करने पधारे। उस समय श्री हरिमंदर साहिब पर 'मसंदों' का कब्ज़ा होने के कारण उन्होंने गुरु जी को दर्शन न करने दिये और श्री हरिमंदर साहिब के किवाड़ बंद कर लिए। वास्तव में मसंदों को यह डर था कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब कहीं श्री हरिमंदर साहिब पर कब्ज़ा न कर लें।

मसंदों की इस करतूत की वजह से गुरु जी श्री अकाल तख़्त साहिब के निकट परिक्रमा में एक 'वृक्ष' के नीचे बने थड़े पर बैठ प्रभु-भक्ति में विलीन हो गए। वर्तमान में इस स्थान पर 'गुरुद्वारा थड़ा साहिब' सुशोभित है। तत्पश्चात गुरु जी इस स्थान से चलकर श्री अमृतसर शहर से बाहर की तरफ रवाना हो गए। श्री हरिमंदर साहिब से लगभग ३ कि. मी. की दूरी पर पहुंचने के बाद आप ने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया जहां आजकल 'गुरुद्वारा दमदमा साहिब' सुशोभित है। वर्तमान में यह गुरुद्वारा श्री अमृतसर-वल्ला रोड पर स्थित है। गुरु जी कुछ समय इस स्थान पर आराम करने के बाद थोड़ा-सा और आगे आ गए। यह जगह श्री अमृतसर केंद्र से लगभग ६ कि. मी. की दूरी पर स्थित गांव 'वल्ला' थी, जहां आप जी एक वृक्ष के नीचे विराजमान हो गए। इसी गांव की एक श्रद्धालु स्त्री बीबी हरीआं ने बहुत ही प्रेम और श्रद्धा से गुरु जी को अपने घर में ले जाकर अपने कोठे (मकान की छत) पर विश्राम करवाकर भोजन इत्यादि छकाया।

दूसरी तरफ जब श्री अमृतसर की संगत को गुरु जी के श्री अमृतसर आगमन और मसंदों

(शेष पृष्ठ ४० पर)

S/o S. Ranjeet Singh, 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar, M : 8727800372

रेडक्रास सोसायटी की आधारशिला बने भाई घनईया जी

*-स. रणवीर सिंह**

सन १६४८ में चिनाब नदी की सहायक चंद्रभागा नदी के तट पर बसे कसबा सोधरा (सोहदरा, सौद्धारा), ज़िला वज़ीराबाद (अब पाकिस्तान में ज़िला गुज्जरांवाला) में एक सम्पन्न खत्री (क्षत्रिय) परिवार में श्री नत्थूराम जी के घर माता सुंदरी की कोख से जन्मे इस बालक का नाम घनईया रखा। भाई घनईया जी बचपन से ही सीधी-सादी और धार्मिक प्रवृत्ति के थे, संसार की मोहमाया से दूर। वे साधु-संतों की संगत में रहकर सतसंग सुनते, सेवा करते और प्राणीमात्र की भलाई को ही अपना परम कर्त्तव्य मानते। जब उन्हें सिक्खों के ९वें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब के विषय में जानकारी मिली तो वे सोधरा से श्री अनंदपुर साहिब उनके दर्शन करने आये। चरण-स्पर्श करते ही उन्हें लगा कि जिस के लिए वे जन्म-जन्मांतर से भटक रहे हैं, वो वस्तु उन्हें यहीं से मिल सकती है। थोड़े ही समय में श्री गुरु तेग बहादर साहिब उनकी लगन, सेवा और भक्ति-भाव से बड़े प्रसन्न हुए।

गुरु जी का आशीर्वाद प्राप्त कर वे अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए जब लाहौर से पेशावर की ओर जा रहे थे तब वर्तमान पाकिस्तान के ज़िला अटक के एक गांव काब्हा में रात गुजारने रुके। उन्हें वहां पता चला कि गांववासी पानी की किल्लत से बड़े परेशान हैं। महिलाएं मीलों दूर पैदल जाकर, सिर पर बर्तन रखकर पानी भरकर लाती हैं। भाई जी ने उन लोगों को इस संकट से उबारने के लिए तथा सेवा-भाव अपनाने के लिए विचार किया। लोगों में जागृति लाने के लिए वे स्वयं मशक में पानी भरकर लाते और जरूरतमंदों में बांटते, परंतु यह उस समस्या का स्थाई और आसान हल न था। आने-जाने वाले राहगीरों तथा गांव के निवासियों की सहूलियत के लिए उन्होंने एक उचित स्थान पर कुआं खोदना आरंभ किया। पूरे गांववासी सहायता के लिए जुट गये। मेहनत रंग लाई। चंद दिनों में ही पानी का कुआं तैयार हो गया और पास ही यात्रियों के ठहरने योग्य धर्मशाला भी बनवा दी गई। दोनों यादगारें आज भी वहां मौजूद हैं। वहां से गुजरने वाले यात्री दो घूंट पानी प्रसाद के रूप में ग्रहण करना अपना सौभाग्य समझते हैं।

इधर भाई जी सेवा के साथ-साथ धर्म प्रचार में भी लगे रहे। नवम गुरु जी की शहादत की ख़बर से विह्वल होकर वे तुरंत श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे। उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मात्र ९ वर्ष के थे। उन्हें दसवें गुरु के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान किया गया। भाई घनईया जी गुरु जी की खालसा सेना में शामिल होकर युद्ध-क्षेत्र में घायल सिपाहियों को पानी पिलाया करते थे।

एक बार युद्ध में भाई घनईया जी घायल सिक्ख सिपाहियों को पानी पिलाने के साथ-साथ

**मु. पो. मांदी, तहसील नारनौल, ज़िला महेंद्रगढ़ (हरियाणा)*

घायल मुगल सिपाहियों को भी पानी पिलाने लगे। उन्हें उनमें अपने-पराए का कोई भेद न लगा। सिक्खों ने इस बात की गुरु जी से शिकायत की। गुरु जी के चेहरे पर चिर-परिचित मुस्कान उभर आई। गुरु जी ने शंका का निवारण करने के लिए भाई जी को बुलाकर पूछा। भाई जी ने निवेदन किया, "सिक्ख सच कह रहे हैं, परंतु सच्चे पातशाह, जब मैं मैदाने-जंग में दर्द से कराह रहे घायल सिपाहियों को देखता हूं तो मुझे अपने-पराये, शत्रु-मित्र का कोई एहसास नहीं रहता। मुझे तो सब में आपका नूरानी चेहरा ही दिखाई देता है।"

गुरु जी ने भाई जी की पीठ थपथपाई और उन्हें मरहम-पट्टी देते हुए गले लगाकर बोले, "भाई जी, आप महान हैं। हमारी लड़ाई किसी व्यक्ति विशेष में नहीं बल्कि जुल्म के खिलाफ है। हम धर्म और सच्चाई के लिए युद्ध कर रहे हैं। भाई जी, आप पानी पिलाने के साथ-साथ बिना भेद-भाव के घायलों की मरहम-पट्टी भी किया करो।"

भाई घनईया जी ने सेवा-भाव के वास्तविक नियम को मूर्तिमान करते हुए सिक्ख इतिहास में विलक्षण स्थान ग्रहण किया। सन १८६४ ई. में जिनेवा सम्मेलन में 'अतर्राष्ट्रीय रेडक्रास सोसायटी' की स्थापना हुई। विश्व स्तर पर भाई घनईया जी को रेडक्रॉस सोसायटी का संस्थापक माना जाता है। भाई घनईया जी के सेवा-भाव से प्रेरित श्री हेनरी ड्यूनेट ने रेडक्रास सोसायटी की स्थापना की।

गुरुद्वारा कोठा साहिब, वल्ला . . . *(पृष्ठ ३८ का शेष)*

की करतूत की ख़बर मिली तो वह बहुत उदास हुई। समूची संगत गुरु साहिब को ढूंढती हुई 'वल्ला' गांव में पहुंच गई और मसंदों की करतूत पर खेद व्यक्त करते हुए क्षमा मांगी तथा वापिस श्री अमृतसर पधारने के लिए निवेदन किया। गुरु जी ने श्री अमृतसर की महिला-संगत की श्रद्धा को देखते हुए उन्हें 'माईआं रब्ब रजाईआं' कहा। फिर गुरु जी भाई मक्खण शाह और अपने अन्य सिक्खों के साथ पुन: बकाला गांव रवाना हो गए।

माई हरीआं का वह 'कोठा' (मकान) जहां पर गुरु जी ने अपने चरण रखे थे, वह गुरु जी के चरण-स्पर्श से सदा के लिए 'कोठा साहिब' बन गया और वर्तमान में गुरुद्वारा कोठा साहिब (गांव वल्ला) के नाम से विख्यात है। इतिहासकारों के मुताबिक महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य-काल के दौरान २० बीघा ज़मीन इस गुरुद्वारा साहिब के नाम लगवाई थी।

माघ मास की पूर्णिमा को गुरुद्वारा कोठा साहिब, गांव वल्ला (श्री अमृतसर) में बहुत भारी जोड़-मेला लगता है, जो कई दिनों तक चलता है। संगत नवम् गुरु जी की पवित्र आमद की याद को ताज़ा करती हुई दूर-दूर से आकर इस स्थान के दर्शन कर निहाल होती है।

शहीदों में बनना सितारा है!

-डॉ. मनजीत कौर*

दुनिया के इतिहास में विलक्षण शहीद दादी गुजरी मां।
दी कैसी महान शिक्षा पोतों को, दी कैसी दुआ?
सूबे की कचहरी में जब वे पहुंचे। नन्ही जानें पर हौंसले थे ऊंचे।
जब उनको सिर झुकाने को कहा। नहीं माने वे सिर उठा के कहा।
हुआ सिंघनाद-- "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि।"
गरजकर बोल उठे थे वो। सिंघ मुख खोल उठे थे यों।
"कभी कहीं पर्वत झुके भी हैं? दरिया कभी रुके भी हैं?
हम भी कदाचित झुक नहीं सकते। किसी कीमत पर रुक नहीं सकते।
शहीदों की है कौम हमारी। परंपरा हमारी जग से न्यारी।
अमर शहीद हिंद की चादर, गुरु तेग बहादर के हम पोते।
सरवंश दानी, अमृत के दाते, दशमेश पिता के हैं हम बच्चे।
लालच तुम्हारा कोई हरगिज़, हमें झुका नहीं सकता।"
सच और हकीकत को आखिर कोई झुठला नहीं सकता।
आरे, देगें, तीर और तलवारें। सारे शहीदों के सामने हारे।
देख बुलंद इरादे मासूमों के, जुल्मी नया इतिहास रचाने लगे।
पोते मां गुजरी के, दशमेश के दुलारे, खुशी के तराने गुनगुनाने लगे।
ज़ोरावर सिंघ ज़ोर से बोला। फ़तह सिंघ जब गर्जा, मानो, आसमान भी डोला।
"रखो जल्दी ईंटें, भरो उनमें गारे! चुनो खूनी दीवार ओ हत्यारे!
कौम के लेखे हमें लगा के, कर लो इरादे पूरे सारे के सारे!
हमारी हर इक सांस बोलेगी! हमारी लाश भी बोलेगी!!
गढ़ी चमकौर की बोलेगी! खूनी सरहंद बोलेगी!!
यह दीवार बोलेगी! हज़ारों बार बोलेगी!! बारंबार बोलेगी!!!
हम झुक नहीं सकते! कदाचित रुक नहीं सकते!!
हमें निज देश प्यारा है! पिता दशमेश प्यारा है!!
हमें निज पंथ प्यारा है! श्री गुरु ग्रंथ प्यारा है!!
है आरजू हमारी, शहीदों में बनना सितारा है!
शहीदी कौम का बस, हमने बनना सितारा है!!

---

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

प्रदूषण की मार तले हवा, पानी तथा भोजन

*-स. हरजिंदर सिंघ**

तंदरुस्त एवं खुशहाल ज़िंदगी जीने के लिए तीन वस्तुओं का होना अति आवश्यक है-- शुद्ध हवा, शुद्ध पानी एवं शुद्ध भोजन। जहां इनमें से किसी भी वस्तु की कमी हो जाए वहां जीवन जीने को मात्र टाईम पास करना ही कहा जायेगा। जहां इन तीनों वस्तुओं की सबसे ज्यादा जरूरत मनुष्य को है वहीं इन तीनों वस्तुओं को ख़तरा भी मात्र मनुष्य से ही है। अकलमंद मनुष्य इस प्राकृतिक अस्तित्व के प्रति जागरूक रहता है और इसकी देखभाल करता है, जबकि लापरवाह व बेसमझ मनुष्य इन वस्तुओं की कद्र न करता हुआ खुद ही इनको खत्म करने या बिगाड़ने की तरफ चल पड़ता है। मनुष्य इन तीनों ही प्राकृतिक नेमतों के बिना ज़िंदा नहीं रह सकता।

आज हमारे पास कितनी शुद्ध वायु उपलब्ध है, यह तो हम सब जानते ही हैं। शहरों में तो बहुत ही बुरा हाल है। फैक्ट्रियों का धुआं, गाड़ियों का धुआं वातावरण को इतना प्रदूषित कर रहा है कि सांस लेना भी मुश्किल हो रहा है। मशीनीकरण के कारण वातावरण पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इसका सबसे ज्यादा असर दिन-ब-दिन बढ़ते वाहनों से पड़ रहा है। बढ़ रहे वाहनों के धुएं से त्वचा तथा सांस की बीमारियां बढ़ रही हैं। धुएं के अलावा गाड़ियों में लगे प्रेशर हॉर्न भी वातावरण में ध्वनि प्रदूषण का कारण बन रहे हैं।

हम सब जानते ही हैं कि शुद्ध वायु के लिए वृक्षों का होना बहुत जरूरी है। आबादी बढ़ने के कारण वृक्षों की संख्या निरंतर घट रही है। जो वृक्ष सड़कों के किनारे लगे हैं वे भी सड़कें चौड़ी होने के कारण काटे जा रहे हैं तथा नए वृक्ष बहुत कम मात्रा में लगाए जा रहे हैं। यह ठीक है कि समय की जरूरत के अनुसार सड़कें चौड़ी करनी पड़ रही हैं किंतु इनके बनने के कारण काटे या उखाड़े गए वृक्षों जगह भी नये वृक्ष भी लगाना उतना ही जरूरी है। जहां कहीं भी १०-२० वृक्ष लगे होते हैं या जहां कहीं भी हरियाली आती है, वहां से गुजरते वक्त वहां के वातावरण में शुद्धता का एहसास खुद-ब-खुद हो जाता है। वृक्ष ही हैं जो हवा को शुद्ध करते हैं। वृक्षों के दिन-ब-दिन कम होने के कारण आज ग्लोबिल वार्मिंग बढ़ रही है, गर्मियों का मौसम लंबा होता जा रहा है तथा सर्दियों का मौसम कम होता जा रहा है। समय की जरूरत को मुख्य रखते हुए यह चाहिए कि हम कोई भी वृक्ष काटने से पहले उसकी कमी को पूरा करने के लिए किसी अन्य योग्य स्थान पर नया वृक्ष अवश्य लगायें।

हवा को प्रदूषित करने का एक अन्य बड़ा कारण यह भी है कि आजकल किसान लोग ज्यादा मेहनत से बचने के लिए फसल काटने के बाद फसल की नरई (फूस) को जला रहे हैं। इस नरई को जलाने से उत्पन्न धुआं वातावरण में घुल जाता है। सरकार द्वारा इस पर लगाई गई पाबंदी के बावजूद भी कहीं-कहीं

**१२, गली नं. २, कपूर नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१ मो. ९७८१५-१५४५६*

पर यह रुझान जारी है। इन उपरोक्त कारणों के कारण आज हम अपने वातावरण को इतना दूषित करते जा रहे हैं कि हमें आसमान भी सही रूप से साफ दिखाई देना कम होता जा रहा है।

दूसरा तत्व है पानी, जिसके बिना हम एक दिन भी नहीं रह सकते। अगर कुछ समय के लिए सोचा जाये कि हम पानी के बिना क्या-क्या कर सकते हैं तो हमें खुद ही पता चल जाएगा कि हम पानी के बिना ज़िंदगी से जुड़ा हुआ कोई काम नहीं कर सकते। सुबह की शुरुआत करने से लेकर रात को सोने तक हमें पल-पल पानी की जरूरत पड़ती है। सुबह उठते ही ब्रश करने के लिए, शौचालय के लिए, स्नान के लिए, कपड़े-बर्तन धोने के लिए, खान-पान की वस्तु तैयार करने के लिए, पीने आदि के लिए पानी की जरूरत पड़ती है। हमें एक दिन भी पानी न मिले तो हमारी ज़िंदगी में उथल-पुथल मच जाती है। दूसरा पहलू यह है कि बिना इन सब बातों की परवाह किए हम रोज़ाना ही बड़ी मात्रा में पानी बर्बाद कर रहे हैं। मनुष्य द्वारा पानी के किए गए हश्र का हर्जाना हम कहीं-कहीं तो भर रहे हैं जबकि भविष्य में और भी भरना पड़ सकता है। अगर कुछ वर्ष पूर्व गुजारे समय की ओर दृष्टि डाली जाए तो जमीन में से पानी निकालने के लिए हमें ५०-७० फुट बोरिंग करना पड़ता था जो कि आज २०० फुट से भी ऊपर पहुंच गया है। पानी का स्तर तेजी से गिर रहा है। पानी का स्तर इतना नीचे जाने के कारण धरती की उपजाऊ-शक्ति भी कम हुई है। दरिया, नदी, तालाब सूख रहे हैं। जो भी पानी बचा है उसमें भी इंसान फैक्ट्रियों से निकलने वाला केमिकल तथा घरों की गंदगी घोलकर इसको प्रदूषित कर रहा है।

हम अपने भविष्य, अपनी आने वाली पीढ़ियों के बारे में नहीं सोच रहे, जिनको पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसना पड़ सकता है। स्नान करते वक्त हम 'ताज़ा' पानी निकालने के चक्कर में कितनी ही बालटियां पानी की व्यर्थ बहा देते हैं। घरों में बनी टैंकियां भरने के बाद अक्सर पानी का बहाव कई घंटों तक होता रहता है। मुफ्त मिली वस्तु की कोई कद्र नहीं करता, शायद यही इंसानी फ़ितरत है।

धार्मिक स्थानों में सेवा आदि की बात करें तो जहां तक हो सके हमें शुष्क व गीले पोचे की सेवा की ओर ही ध्यान देना चाहिए; बहुत ही ज्यादा जरूरत होने पर पानी का प्रयोग करना चाहिए।

तीसरी जरूरी वस्तु है-- भोजन। वर्तमान ज़िंदगी में इंसान पैसे की दौड़ में इतना अंधा हो गया है कि किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। इंसान ही इंसान की सेहत से खिलवाड़ करने के लिए तैयार है। दूध से ही शुरुआत कर लें तो मिलावट का सबसे ज्यादा सामना दूध को ही करना पड़ रहा है। यदि दूध में मिलावट है तो दूध से बनने वाली वस्तुएं- मक्खन, पनीर, दही, घी, मिठाई आदि भी मिलावटी होंगी। पशुओं से जल्दी एवं ज्यादा दूध लेने के लिए उनको अनावश्यक टीके लगाये जाते हैं, जिनका प्रभाव दूध में भी आता है, जो कि मनुष्य की सेहत को किसी न किसी हद तक अवश्य प्रभावित करता है।

कहते हैं कि हरी सब्जियां स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं, परंतु सब्जियों का क्षमता से अधिक उत्पादन और वो भी कम समय में लेने के लिए

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

गुरबाणी चिंतनधारा : ६६

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥

प्रस्तुत पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रभु-प्राप्ति के समस्त साधनों में से प्रभु-नाम-सिमरन को सर्वोच्च माना है और प्रभु-नाम को ही बीज रूप में मानते हुए उससे ही परम ज्ञान, जीवन-युक्ति-मुक्ति, सब कुछ संभव होना माना है। यह वो औषधि है जो समस्त रोगों एवं विकारों से मुक्त करवाती है। इसमें पशु, प्रेत, मूढ़ तथा पत्थर-हृदय लोगों को भी भवसागर से पार उतारने की सामर्थ्य है।

गुरु पातशाह पांचवी पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का नाम ही परम ज्ञान है। यही बीज-मंत्र है अर्थात् सबको ज्ञान प्रदान करने वाला है। चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) में से कोई भी मनुष्य परमेश्वर का नाम-सिमरन कर सकता है। जिसने भी नाम-सिमरन किया उसी की आत्मिक अवस्था ऊंची हो गई, उसी ने जीते-जी मुक्तावस्था प्राप्त कर ली। यह भी हकीकत है कि कोई विरला ही साधसंगत में आकर प्रभु-नाम की कमाई करता है। यही नहीं, प्रभु-कृपा से जो मनुष्य प्रभु-नाम को हृदय में बसा लेता है उसका उद्धार हो जाता है। साधारण मनुष्य तो क्या पशु, प्रेत, मूढ़ तथा कठोर वृत्ति वाला मनुष्य भी प्रभु-नाम द्वारा भवसागर से पार उतर जाता है। प्रभु-नाम ही समस्त रोगों की औषधि है। प्रभु-नाम द्वारा परमेश्वर की आराधना (गुणगान) आनंददायक एवं कल्याणकारी सिद्ध होती है अर्थात् परमेश्वर की बंदगी श्रेष्ठ भाग्य का प्रतिफल है। परमेश्वर का अनमोल नाम रूपी तोहफा किसी भी तरह के धार्मिक कर्मकांडों, रस्मों अथवा रीति-रिवाज़ों से नहीं हासिल होता। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि नाम रूपी खज़ाना उस व्यक्ति को मिलता है जिसकी तकदीर को परमेश्वर ने दरगाह से ही संवार कर, उसमें अपनी कृपा से शुभ लेख लिख दिए हों।

वस्तुतः प्रभु-नाम की महिमा अपरंपार है। यह वो विलक्षण औषधि है जो समस्त शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक विकारों एवं रोगों से निजात दिलाने में सफल है। यह प्रभु-नाम रूपी औषधि अच्छे भाग्य से मिलती है। जिसकी तकदीर के सितारे स्वयं अकाल पुरख ने जन्म से पूर्व ही चमका दिए हों वही समस्त कर्मकांडों, भ्रमों के चक्कर से बचकर प्रभु-महिमा का गान करता हुआ अपना लोक-परलोक संवार लेता है। परमेश्वर का नाम ही प्रभु-प्राप्ति का सच्चा मंत्र

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

(साधन) है। भक्त बेणी जी की बाणी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है, यथा :

जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥
तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥
बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥
मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥ (पन्ना ९७४)

गुरबाणी आशयानुसार जिसने भी प्रभु-नाम जपा है, प्रभु-नाम से लिव जोड़ी है, वह चाहे जिस जाति, वर्ण, वर्ग का हो, उसका उद्धार हो गया। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव को स्पष्ट किया गया है, यथा :

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ (पन्ना १३६)

--जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥
तिस का नामु सति रामदासु ॥
आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥
सो दासु दरगह परवानु ॥
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥
सगल संगि आतम उदासु ॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥

नौंवी असटपदी की छठी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के सच्चे सेवक के लक्षण बताए हैं और यह भी स्पष्ट किया है कि ऐसा सेवक जीवन-युक्ति को समझता हुआ, सबके बीच रहता हुआ भी निर्लेप भाव से विचरण करता है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जिस हृदय-घर में पारब्रह्म परमेश्वर का निवास है अर्थात् जिस मन में ईश्वर रहते हैं, वही वास्तव में रामदास अर्थात् राम (प्रभु) का असली दास (सेवक) है। कण-कण में व्याप्त प्रभु उसे सर्वत्र दिखाई देने लगता है। सेवक-सेव्य अर्थात् प्रभु के दासों के भी दास होने के स्वभाव के कारण ही उसने सर्वत्र में बसते परमेश्वर को सहजता से प्राप्त कर लिया है। जो प्राणी परमेश्वर को निकट से निकट अर्थात् अपने बहुत पास समझता है, वही मालिक के दर पर कबूल होता है। अपने सेवकों पर प्रभु खुद रहमत करता है। प्रभु-कृपा के पात्रों को जीवन की वास्तविक युक्ति समझ में आ जाती है। ऐसी जीवन-युक्ति को समझने वाला भक्त ही सच्चा 'रामदास' है, प्रभु का सेवक है। कण-कण में विराजमान, सर्वशक्तिमान परमेश्वर को ही सर्वस्व मानने वाला और हृदय से विनम्रता को धारण करने वाला, जिसे अहं भी छू न सके, समस्त दिखावों एवं आडंबरों से रहित जीव ही प्रभु का दास है न कि वाह्य वेश धारण कर, पांव में घुंघरू आदि बांधकर नृत्य करने वाला। पंचम पातशाह ने बाणी में अन्यत्र भी संकेत किया है, यथा :

घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥
बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥
गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥
हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ (पन्ना १००३)

अर्थात् केवल रोटियों (उदर-पूर्ति) के लिए किए गए प्रयोजनों-- व्रत, नियम, षट कर्म, गीत, संगीत, नाद आदि द्वारा कोई प्रभु का दास नहीं हो जाता, अपितु हर्ष, शोक, लोभ, मोह आदि से रहित व्यक्ति ही वास्तव में प्रभु का संत है।

गुरबाणी हमें बारंबार प्रभु-नाम का आश्रय लेकर विचरण करने को प्रेरित करती है, जिससे

सहजता से ही दुर्मति भाग जाती है और जीव निर्वाण पद की प्राप्ति कर लेता है। श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी मार्गदर्शन करती है :

--रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥ (पन्ना ९०१)
--प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अंनदु तह नही बिओगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥

नौंवी असटपदी की सातवीं पउड़ी में गुरुदेव फरमान करते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा को खुशी से शिरोधार्य करने वाला व्यक्ति ही जीते-जी मुक्तावस्था का अधिकारी हो जाता है अर्थात् जो व्यक्ति आत्मा से प्रभु की रज़ा (हुक्म) को मीठा करके मानता है वही उसके दर पर प्रवान है। उसके लिए हर्ष-शोक दोनों ही समान हैं। उसके हृदय-घर में हर पल परमेश्वर की यादें चलती रहती हैं, किसी भी पल परमेश्वर से वियोग नहीं होता अर्थात् वह चित्त से, किसी भी श्वास से उसे विस्मृत नहीं होने देता। जहां परमेश्वर के चरणों का मिलाप है वहां दुख नहीं हो सकता।

स्वर्ण और मिट्टी उसके लिए एक समान है। स्वर्ण जैसी कीमती धातु को देखकर वह लालच में नहीं आता। उसके लिए अमृत और विष में भी कोई अंतर नहीं। ऐसे जीव के लिए मान-अपमान में भी कोई अंतर नहीं। राजा और रंक भी उसके लिए समान है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि ऐसे व्यक्ति को जीवन-मुक्त माना जाता है जो प्रभु की रज़ा को, उसके व्यवहार को ही जीवन-युक्ति मानता है।

उपरोक्त पउड़ी में धर्म-ग्रंथों के अनुसार मुक्ति का सामान्य अर्थ चौरासी लाख योनियों के आवागमन से मुक्त होना है। गुरबाणी आशयानुसार जीते-जी समअवस्था में रहता हुआ जीव अपनी आत्मा को परमात्मा में अभेद कर देता है, जहां सुख-दुख, मान-अपमान, राजा-रंक, सोना-मिट्टी में अंतर विशेष दिखाई नहीं देता। यूं ही भक्त नामदेव जी ईश्वर से जीते-जी मुक्ति पाने की गुहार लगाते हैं। अगर मृत्यु उपरांत मुक्ति मिली तो कोई मुक्ति का तात्पर्य क्या जानेगा?

मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ (पन्ना १२९२)

भक्तों की अभिलाषा तो जीते-जी मुक्तावस्था-प्राप्ति की होती है और यह प्राप्ति होती है श्वास-ग्रास प्रभु-भक्ति में लीन होकर, उसकी रज़ा में प्रसन्न रहकर।

वैसे तो सारी सृष्टि परमेश्वर का गुणगान करती है, लेकिन भवसागर से वही सहजता से पार उतरते हैं जिनके चित्त में वो हर दम, हर पल बसा रहता है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

गावनहारी गावै गीत ॥
ते उधरे बसे जिह चीत ॥ (पन्ना १२९९)

उस परवरदिगार की रहमत से जीव को यह अनुपम अवस्था प्राप्त होती है।

पारब्रहम के सगले ठाउ ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥
आपे करन करावन जोगु ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥

पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
पारब्रहम करता अबिनास ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥

नौंवी असटपदी की अंतिम पउड़ी में पंचम पातशाह अकाल पुरख की सर्वव्यापकता एवं सर्वसमर्थता की सुंदर अभिव्यंजना करते हैं। गुरुदेव फरमान करते हैं कि समस्त स्थान परमेश्वर के हैं। जहां-जहां वह जीवों को रखता है वैसा ही उस स्थान का नाम पड़ जाता है अर्थात् समस्त शरीर रूपी घर परमेश्वर के ही हैं। जिस स्थान पर वह जीवों को रखता है उसी रूप में वह प्रसिद्ध हो जाता है। कहने से तात्पर्य, जीव को प्रभु जिस रूप में ख्याति दिलवाता है, जीव उसी रूप में विख्यात हो जाता है।

प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने की सामर्थ्य रखता है। जो परमेश्वर को अच्छा लगता है वही कुछ होकर रहता है अर्थात् निश्चित रूप से वही कुछ होता है जो निरंकार ने करना होता है। (निर्गुण निराकार होते हुए भी) परमेश्वर अनंत तरंगें बनकर सर्वत्र मौजूद है। उसके कौतुक अवर्णनीय हैं। वह परमेश्वर जिस जीव को जिस तरह की बुद्धि बख़्शता है वैसा ही ज्ञान रूपी प्रकाश उसके अंदर प्रकट हो जाता है। परमेश्वर सब कुछ करने वाला तथा अविनाशी है। वह सदैव दयालु प्रवृत्ति का अर्थात् दया का सागर है।

पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि जीव प्रभु का निरंतर सिमरन करते हुए सदैव आनंद भरपूर रहते हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने 'निहाल' शब्द के अर्थ सुगंधी देने वाले फूल के अर्थ में किए हैं। उनके चिंतनानुसार जीव प्रभु का सिमरन कर फूल सदृश्य खिले रहते हैं।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने निर्गुण निराकार के सगुण प्रसार एवं सर्वव्यापकता का गुणगान किया है कि परमेश्वर जर्रे-जर्रे में व्यापक है। उसके अजब कौतुक हैं। वह किस पल क्या से क्या कर दे यह भेद कोई नहीं जान सकता। वह जिस किसी को जो कुछ कहने की अथवा करने की सामर्थ्य बख़्शता है, जीव वही कुछ कहने और करने योग्य हो जाता है। उसकी रहमतों का कहीं कोई अंत नहीं। जिसे वह अपना सिमरन करने की कृपा करता है वह निहाल-निहाल हो जाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी यही स्पष्ट किया गया है कि वह अविनाशी प्रभु जिस जीव को जैसी मनोवृत्ति और बुद्धि-बल बख़्शता है, जीव वही कुछ करने और कहने में समर्थ हो जाता है। उसका कोई अंत नहीं पा सकता। गुरु कलगीधर पातशाह का पावन [illegible] है :

[illegible] बुधि है जेती ॥
ब[illegible]त [illegible] भिंन तुहि तेती ॥
तुमरा [illegible] न जाइ पसारा ॥
किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ (चौपई)
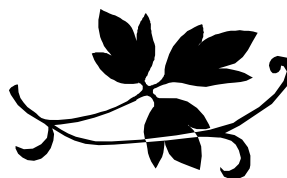
गुरसिखी बारीक है . . . २१

*-डॉ सत्येन्द्रपाल सिंघ**

मनुष्य जिससे प्रेम करता है अपने अस्तित्व को उसके साथ जोड़ लेता है। सच्चे प्रेम की पहचान यही है कि बीच का अंतर मिट जाये, सोच, चरित्र और कर्म एकाकार हो जायें। प्रेम में चेतना प्रत्यक्ष रूप से उसके पक्ष में खड़ी हो जाती है जिससे प्रेम किया जाता है। एक गुरसिक्ख अपनी सम्पूर्ण क्रियाशील चेतना के साथ परमात्मा के पक्ष में खड़ा नज़र आता है। यह पक्ष कोई समर्थन नहीं और परमात्मा को किसी समर्थन की इच्छा भी नहीं, क्योंकि वह इन सबसे ऊपर है, परे है। यह पक्ष है उससे जुड़ना, उसकी शरण में जाना, उसे सर्वस्व अर्पण कर देना। अन्य किसी भी प्रेम में मनुष्य जुड़ता है, समर्पण करता है, किंतु शरणागत नहीं होता। शरणागत मात्र प्रेम यदि परमात्मा से हो तो ही उससे जुड़ा जा सकता है। परमात्मा से प्रेम की अवस्था ही महानतम् अवस्था है जो चिरजीव होती है। भाई गुरदास जी इसकी महानता का वर्णन बड़े ही सूक्ष्म ढंग से करते हैं :

रूपै कामै दोसती जग अंदरि जाणी।
भुखै सादै गंढु है ओहु विरती हाणी।
धुलि मिलि मिचलि लबि मालि इतु भरमि भुलाणी।
ऊघै सउड़ि पलंघ जिउ सभि रैणि विहाणी।
सुहणे सभ रंग माणीअनि करि चोज विडाणी।
पीर मुरीदां पिरहड़ी ओहु अकथ कहाणी।
(वार २७:५)

कामी पुरुष की रूप-सौंदर्य के प्रति आसक्ति की कितनी ही कथाएं हैं। भूखे के लिए भोजन सबसे महत्त्व का हो जाता है। लोभी को सदैव धन की ही आस लगी रहती है और कुछ नहीं सूझता। जब नेत्रों में निद्रा व्याप्त हो तो शय्या से बड़ा सुख नहीं, जिसमें पूरी रात व्यतीत हो जाती है। सुंदर सपनों में मनुष्य आनंद-विलास को पान करता है। ये सारी ही स्थितियां भरपूर सुख प्रदान करने वाली हैं किंतु जो प्रीति परमात्मा से होती है उसके सुख और आनंद का वर्णन ही नहीं किया जा सकता।

जितने भी अन्य तरह के प्रेम हैं उसमें सुख और आनंद तो है किंतु दुख और निराशा के योग भी बनते हैं। सौंदर्य सदैव ही कामी पुरुष को सुख देता है, ऐसा नहीं है। भोजन कष्टदायक भी बन जाता है, धन समस्याएं भी उत्पन्न करता है, निद्रा व्यथित भी कर सकती है, मगर परमात्मा का प्रेम ही ऐसा है जो सदैव सुख और संतुष्टिदायक है :

वणजु करै वापारीआ तितु लाहा तोटा।
किरसाणी किरसाणु करि होइ दुबला मोटा।
चाकरु लगै चाकरी रणि खांदा चोटां।
राजु जोगु संसारु विचि वण खंड गड़ कोटा।
अंति कालि जम जालु पै पाए फल फोटा।
पीर मुरीदां पिरहड़ी हुइ कदे न तोटा।
(वार २७:८)

भाई गुरदास जी और विस्तार में जाते हुए कहते हैं कि व्यापार में कभी लाभ, कभी हानि होती है; कृषि में फसल कभी अच्छी होती है और कभी सूख भी जाती है। किसी की चाकरी

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

में दुख भी सहने पड़ सकते हैं। राज्य करने वाले और वन में जाकर तपस्या करने वाले दोनों को ही वह फल नहीं प्राप्त होता जिसकी वे आशा करते हैं अर्थात् वे आवागमन से मुक्त नहीं होते। लाभ के साथ ही हानि जुड़ी हुई है, किंतु गुरसिक्ख को परमात्मा से प्रेम में लाभ ही लाभ प्राप्त होता है, वहां हानि की कोई संभावना नहीं होती। यह प्रेम सभी अभावों से मुक्त और उत्कृष्ट है। गुरसिक्ख यह जानता है इसीलिए अपना सब कुछ परमात्मा को ही मानता है। सांसारिकता न तो उसे लुभा पाती है न ही वह उसमें अपना कोई हित देखता है, तात्कालिक अथवा दूरगामी :

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥
किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥
किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥
हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥
हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ (पन्ना ३६६)

इस संसार में बहुत-से लोग अपने मित्रों, पुत्र-भाई के सहारे जीवन जीना चाहते हैं। बहुत-से अन्य व्यक्ति अपने भिन्न सम्बंधियों का गुमान करके जीवन में आधार ढूंढते हैं। ऐसे भी हैं जो बलशाली और बड़े ओहदेदारों से सम्बंध में अपना हित देखते हैं। गुरसिक्ख को अपना हित परमात्मा में ही दिखाई देता है इसलिए वह अपनी समस्त आशाओं के लिए परमात्मा के पास ही जाता है। वह परमात्मा पर ही अपनी क्रियाशील चेतना को टिका देता है। गुरसिक्ख परमात्मा पर ही अपनी चेतना को क्यों टिका देता है, इसका सहज उत्तर भी गुरबाणी देती है :

जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥
झूठु धड़े करि पछोताहि ॥
थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥
हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥२॥
एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥
माइआ कउ लूझहि गावारी ॥
जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥
हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥३॥
(पन्ना ३६६)

सांसारिक सम्बंधों और पदार्थों से प्रेम कर पछताना पड़ता है क्योंकि वे सब चलायमान हैं, अस्थिर हैं। ऐसे आधार अंततः झूठे सिद्ध होते हैं। इनसे मन प्रभु के मार्ग से विचलित होता है। परमात्मा जैसा जीवन-आधार अन्य कोई नहीं है। सभी सांसारिक सम्बंध और पदार्थ माया के भ्रम हैं, जिनमें उलझकर मनुष्य अपने जीवन को व्यर्थ करता है। परमात्मा को जीवन का आधार बनाना वर्तमान और भविष्य दोनों को संवार देता है, जीवन आनंदमय हो जाता है :

आनंदा वजहि नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥
गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥
अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥
सरब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ (पन्ना ७८१)

गुरसिक्ख वह है जो परमात्मा को अपना सब कुछ मानकर अपने मन में बसा लेता है, जिससे उसमें सदैव आनंद व्याप्त रहता है। उसके भ्रम मिट जाते हैं, सच की राह दिखने लगती है और उसे सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं। उसे सच दिखने लगता है कि परमात्मा के बिना कुछ भी अधिक समय तक साथ रहने वाला

नहीं :

ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥
सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥
(पन्ना १०१५)

उपरोक्त अनमोल वचन गुरु नानक साहिब के हैं जिसमें उन्होंने परमात्मा से गुरसिक्ख के सम्बंध को सच्चे सम्बंध की संज्ञा दी है। बहन, भाभी, सास आदि सारे सम्बंध टूट जाने वाले हैं। परमात्मा से जोड़ा हुआ सम्बंध कभी नहीं टूटता :

फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥
आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥२॥
मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥
साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ धणी दरीआउ ॥३॥
साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥
सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥४॥
(पन्ना १०१५)

सम्बंधों का पूरा काफ़िला सामने दिखता है। कितने ही सम्बंध होते हैं! फूफी, नानी, मासी, देवरानी, जेठानी, मामा, मामी, भाई, माता, पिता जैसे सम्बंधों की भरमार के मध्य मनोहर और स्थिर सम्बंध परमात्मा का ही है जो कभी वियोग नहीं होने देता।

परमात्मा से सम्बंध को सच्चा और सदा साथ रहने वाला, कभी वियोग न देने वाला इसलिए कहा गया है क्योंकि यह सम्बंध परमात्मा की शरण में जाकर उसकी कृपा प्राप्त करने से ही बनता है। शेष सारे सम्बंध या तो जन्म से होते हैं या लेन-देन के होते हैं। इस सम्बंध में परमात्मा ही गुरसिक्ख के मन में प्रेम की ज्योति जलाता है, उसे राह दिखाता है, असत् से बचाता है :

सरनी आइओ नाथ निधान ॥
नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥१॥रहाउ॥
सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥
देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥ (पन्ना १११९)

गुरसिक्ख जब सांसारिकता को दरकिनार कर परमात्मा को अपनी चेतना का आधार बना लेता है तो उससे ही याचना करता है कि मन में जगा प्रेम का रस सदा बना रहे और रसना पर सदैव परमात्मा का गुणगान रहे। गुरसिक्ख जानता है कि इस सम्बंध में ही उसकी शोभा है :

धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥
नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहि काउ ॥२॥
(पन्ना १२४७)

यह संसार तभी अनुकूल होता है जब मनुष्य परमात्मा से जुड़ जाता है अन्यथा संसार और जीवन सारहीन हो जाता है। गुरमुख जानता है कि वह इस संसार में सांसारिक सम्बंधों और पदार्थों से आनंद रस की तलाश करने के लिए नहीं आया है। उसका जीवन परमात्मा से सम्बंध जोड़ने में है।

नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥
काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥
मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥ (पन्ना १८८)

गुरसिक्ख को परमात्मा का सच्चा सम्बंध भ्रम से बचाता है। परमात्मा सदा उसका सहायक बनकर खड़ा रहता है और उसके मान को बनाये रखता है। गुरसिक्ख और परमात्मा के प्रेम-सम्बंध में गुरसिक्ख सदैव दीन, याचक बना रहता है। वह कभी भी अपने मन में इस प्रेम-सम्बंध का अहम् नहीं उत्पन्न होने देता और इस सम्बंध के बने रहने से अधिक की कामना नहीं रखता।

मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥
अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥

ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥
मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥१॥ (पन्ना ४९९)

गुरसिक्ख की दृष्टि में कोई सांसारिक रिश्ते-सम्बंध अथवा व्यवहार नहीं। उसका कोई सांसारिक संरक्षक, मित्र, सहायक नहीं है। वह गुणों से विहीन भी है। उसमें न तो कोई ज्ञान है, न कोई कला, कौशल अथवा सामर्थ्य है। उसे बस, इतना ज्ञान है कि परमात्मा की शरण में जाने से उसका उद्धार हो सकता है तथा अन्य किसी के सहयोग, आश्रय में कोई बल नहीं है जिससे उसका हित हो सके। ज्ञान का यह एक सूत्र ही गुरसिक्ख के जीवन को परिष्कृत करके उसे परमात्मा की कृपा और प्रेम का पात्र बनाकर उस शिखर पर सहज ही ले जाता है जिसके निकट बड़े-बड़े जती-तपस्वी-साधक भी नहीं पहुंच पाते। गुरसिक्ख प्रेम में डूबकर वो सब कुछ पा लेता है जो युगों की साधना से बड़े साधन भी नहीं प्राप्त कर पाते। सिक्ख धर्म-दर्शन की यह विलक्षणता उसे पूरे विश्व में एक निराली चमक प्रदान करती है :

गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥
आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥
हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥
राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥रहाउ॥
जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥ (पन्ना ६१९)

ऐसा और कोई सम्बंध नहीं है जिसमें जो कुछ मांगा जाये सब कुछ मिल जाये। गुरमुख और परमात्मा का प्रेम-सम्बंध एक ऐसे दृढ़ विश्वास को जन्म देता है कि गुरमुख जो कुछ परमात्मा से मांगता है उसे मिल जाता है। परमात्मा की पूरी कृपा उसे प्राप्त होती है और समर्थ परमात्मा उसे अपनी कृपा से निहाल-निहाल-निहाल कर देता है।

प्रदूषण की मार तले हवा, पानी . . .

(पृष्ठ ४३ का शेष)

आजकल रासायनिक खादों का प्रयोग बहुत ज्यादा बढ़ गया है। देसी खाद में हमारी रुचि नहीं रही। खरपतवारनाशक तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग शिखर तक पहुंच गया है। मुनाफा ज्यादा कमाने के लिए सब्जियों को टीके तक लगाए जा रहे हैं। इसके बारे में यह जानते हुए भी कि ये टीके मनुष्य की सेहत पर बुरा प्रभाव डालते हैं, फिर भी मात्र अधिक धन की खातिर ये टीके सब्जियों के जरिए मानव-शरीर में पहुंचाए जा रहे हैं। ऐसा आम तौर पर बिक्रय हेतु बोई गई सब्जियों में ही किया जाता है। ज़्यादा लाभ लेने वाले ये भूल जाते हैं कि इन सब्जियों को भी तो उनके जैसे किसी अन्य इंसान ने ही खाना है।

सब्जियों के अलावा फलों को भी मीठे या ज्यादा रसदार बनाने तथा जल्द से जल्द पकाने के लिए उन पर भी कुछ रासायनिक दवाइयों का इस्तेमाल धड़ल्ले से हो रहा है। बात की बात, बज़ारों में शायद कुछ भी बिना मिलावट तथा 'मीठे ज़हर' के नहीं बिक रहा।

आओ, आज यह प्रण लें कि सबसे पहले हम अपने जीवन तथा शरीर को तंदरुस्त रखने के लिए अपना इर्द-गिर्द संवारेंगे, अपना खान-पान शुद्ध रखेंगे तथा 'सरबत्त के भले' के सिद्धांत पर दृढ़ रहते हुए दूसरों को भी शुद्ध खान-पान मुहैया करवाएंगे। यही है 'जीओ और जीने दो' का नियम।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ५

स. मंगल सिंघ

*-स. रूप सिंघ**

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष, रोज़ाना अकाली पत्रिका के प्रथम संपादक, सिक्ख पार्लियमेंटेंरीयन स. मंगल सिंघ का जन्म १५ मार्च, १८९२ ई. को ज़ैलदार स. कपूर सिंघ तथा माता किशन कौर के घर गांव गिल्ल (लुधियाना) में हुआ। अंग्रेज सरकार ने ज़ैलदार स. कपूर सिंघ को दो मुरब्बा ज़मीन चक्क नं. २०८, ज़िला लायलपुर में अलॉट की। यह ज़मीन नहरी पानी के अधीन थी। स. कपूर सिंघ खेतीबाड़ी करने हेतु अपना पैतृक गांव छोड़कर लायलपुर ज़िले में बस गए। स. मंगल सिंघ ने दसवीं का इम्तिहान खालसा हाई स्कूल, लायलपुर में उत्तीर्ण कर एफ़. ए. गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से की। स्कूल में सरदार साहिब पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ के विद्यार्थी थे। उच्चतम विद्या के लिए उन्होंने खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर में दाख़िला लिया। १९१४ ई. में प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ गया, जिसके कारण इनको कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़नी पड़ी तथा १९१७ ई. में विश्व-युद्ध में भारतीय सिग्नल कोर के फौजी के रूप में शामिल हुए। खालसा कॉलेज के प्रिंसीपल मिस्टर वादन ने १२५ नौजवान फौज में भर्ती करवाए, जिनमें स. मंगल सिंघ भी शामिल थे। विश्व-युद्ध के समय इनको मौजूदा इराक एवं यूरोप में बतौर भारतीय सिपाही लड़ना पड़ा। विश्व-युद्ध की समाप्ति पर १९१९ ई. में ये देश वापिस आए। विश्व-युद्ध में स. मंगल सिंघ द्वारा डाले योगदान को समक्ष रखते हुए अंग्रेज सरकार ने इन्हें बी. ए. की ऑनरेरी डिग्री तथा तहसीलदार की नौकरी देकर सम्मानित किया। इस समय पंजाब में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर ज़ोर से चल रही थी। सिक्ख-सिद्धांतों, गुरमति विचारधारा तथा सिक्ख रहित मर्यादा की जानकारी प्राप्त कर स. मंगल सिंघ गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में कूद पड़े। धार्मिक रुचि एवं समर्पण-भावना ने इनको तहसीलदार की नौकरी त्यागने के लिए मज़बूर कर दिया। गुरु-ग्रंथ एवं गुरु-पंथ को समर्पित सिक्ख नेताओं की प्रेरणा सदका स. मंगल सिंघ ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को घर-घर पहुंचाने एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए १९२० ई. में 'रोज़ाना अकाली पत्रिका' अख़बार शुरू की, जिसके वे प्रवर्त्तक-संपादक थे।

अंग्रेज सरकार से सम्मानित स. मंगल सिंघ ने अंग्रेज सरकार की घातक नीतियों, महंतों और पुजारियों की काली करतूतों के विरुद्ध बेखौफ होकर लिखा, जिसके कारण इनको जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। इनको तीन वर्ष की कैद तथा १०००/- रुपये जुर्माने की सज़ा दी गयी, किंतु १९२३ ई. में सरकार ने स. मंगल सिंघ को रिहा कर दिया। गुरु के बाग के मोर्चे के समय अंग्रेज हकूमत ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल को गैर-कानूनी करार देकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बहुत सारे सदस्यों तथा अकाली नेताओं को जेल में बंद कर दिया। जुलाई, १९२४ ई. में स. मंगल सिंघ ने अंग्रेजी अख़बार 'हिंदोस्तान टाईम्ज़' शुरू किया, जिसका प्रथम

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

पर्चा ८ सितंबर, १९२४ ई को पाठकों के हाथों में पहुंचा। मिस्टर पानियर इसके प्रथम संपादक थे, किंतु अफ़सोस, उस समय स. मंगल सिंघ तथा अन्य सिक्ख अगुआ इसको जारी न रख सके। यह अख़बार इनको १९२६ ई में पंडित मालवीय को बेचना पड़ा। १९२४-१९२५ ई में सरदार साहिब सर्व-हिंद कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। २७ अप्रैल, १९२५ ई को स. मंगल सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गए। अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की हैसियत से स. मंगल सिंघ ने गुरुद्वारा कानून बनाने में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन दिया। वास्तव में गुरुद्वारा कानून की शर्तों को मानने और न मानने के विषय पर सिक्ख-शक्ति दो वर्गों में बंट गयी। स. मंगल सिंघ गुरुद्वारा कानून बनाने के हक में थे।

जून, १९२६ ई में सिक्ख गुरुद्वारा कानून के अनुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के पहले चुनाव के समय स. मंगल सिंघ इसके सदस्य चुने गए। उस समय चुनाव गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड के नाम तले लड़े गए। ४ सिंतबर, १९२६ ई को गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड की प्रथम एकत्रता टाऊन हॉल, श्री अमृतसर में ज़िलाधिकारी, श्री अमृतसर की प्रधानगी तले हुई। प्रथम एकत्रता के चेयरमैन के चुनाव के समय स. मंगल सिंघ को ८३ वोट तथा इनके विरोधी को ५३ वोट प्राप्त हुए। स. मंगल सिंघ इस एकत्रता के चेयरमैन तो चुने गए, किंतु इस चुनाव से अकाली एकता व इत्तफ़ाक की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। स. मंगल सिंघ की चेयरमैनी के अधीन गुरुद्वारा बोर्ड के १४ सदस्य नामज़द किए गए।

२ अक्तूबर, १९२६ ई को सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड के अध्यक्ष तथा अन्य ओहदेदार चुनने के लिए एकत्रता हुई। इस एकत्रता की अध्यक्षता के लिए भी स. मंगल सिंघ के नाम को प्रवानगी मिली। इस दिन की एकत्रता के समय सबसे पहले दो शोक-प्रस्ताव पेश किए गए। पहले प्रस्ताव में अकाली अगुआ स. तेजा सिंघ समुंदरी के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित करके श्रद्धा-सत्कार भेंट किया गया। दूसरा शोक-प्रस्ताव सदस्य स. दसोंधा सिंघ कटाणी कलां के अकाल चलाना कर जाने के सम्बंध में किया गया। इस एकत्रता में ही स. मंगल सिंघ ने स. हज़ारा सिंघ यामाराय का इस्तीफा पेश किया, जिनको ४ सितंबर, १९२६ ई को नामज़द किया गया था। इस रिक्त स्थान पर मास्टर तारा सिंघ जी को बोर्ड का सदस्य नामज़द किया गया, जो उस समय गणमान्य दर्शकों में बैठे थे।

नये ओहदेदारों के चुनाव में बाबा खड़क सिंघ जी सर्व-सम्मति से गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड के अध्यक्ष चुने गए। बाबा खड़क सिंघ जी उस समय ज़ेल में थे। इसी कारण एकत्रता की कार्यवाही अध्यक्ष के रूप में स. मंगल सिंघ ने चलायी। उपाध्यक्ष के चुनाव के समय मास्टर तारा सिंघ जी की पंथप्रस्ती को सम्मुख रखते हुए उनको उपाध्यक्ष चुन लिया गया। मास्टर तारा सिंघ जी ने उपाध्यक्ष की हैसियत से एकत्रता की शेष कार्यवाही चलाई तथा कार्यकारिणी कमेटी का चुनाव किया। ८-सदस्यीय कार्यकारिणी कमेटी चुनी, जिसमें स. मंगल सिंघ भी शामिल थे। इस तरह स. मंगल सिंघ की अध्यक्षता का २ अक्तूबर, १९२६ ई. अंतिम दिन बन गया।

कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य बनकर स. मंगल सिंघ ने यह प्रस्ताव पेश किया कि "सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड की यह एकत्रता उन शूरवीरों, जो गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में कैद होकर अब तक पंथ की आन-शान कायम रखने की खातिर ज़ेल में बंद हैं और जिन्होंने सरकार द्वारा लगाई ज़लील शर्तों को प्रवान नहीं किया,

को दिल से मुबारकबाद देती है।" इस मामले पर बहुत गर्मागर्मी हुई, किंतु सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पारित हो गया।

१३ मार्च, १९२७ ई को कार्यकारिणी कमेटी की मीटिंग हुई। मीटिंग के समय स. मंगल सिंघ ने कैदियों की रिहायी का प्रस्ताव पेश किया, जो सर्व-सम्मति से प्रवान किया गया।

यह सभी जानते हैं कि आपसी फूट एवं विभाजन जत्थेबंदक-शक्ति को बिखेर देता है। लाहौर ज़ेल में बंद सिक्ख नेताओं ने स. मंगल सिंघ को संदेश भेजा कि वे स. अमर सिंघ को दरख्वास्त करें कि वे अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व शिरोमणि अकाली दल में अच्छे सम्बंध कायम करें। जिस किसी में भी कोई कमी है, वो दूर की जाए। स. मंगल सिंघ भी इस मसले पर पूरी-पूरी कोशिश करें ताकि दोनों दलों में सुखमय हालात बन सकें, जिस पर सफलता निर्भर है।

स. मंगल सिंघ ने अकाली अख़बार में उच्च कोटि के लेख लिखे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नए चुनाव कराने हेतु मुहिम चलायी। स. मंगल सिंघ के इस यत्न को भरपूर समर्थन मिला। पंथक एकता के लिए इनके द्वारा दिए गए नारे को लोगों ने काफी पसंद किया एवं समर्थन दिया। स. मंगल सिंघ चुनाव कमेटी के सदस्य नियुक्त किए गए, किंतु चुनाव के बाद भी धड़ेबंदी खत्म न हो सकी। पंथक भलाई हेतु स. मंगल सिंघ को एक बार महात्मा गांधी के पास भी भेजने का फैसला किया गया, ताकि सरदार जी महात्मा गांधी को पंथक संकट से वाकिफ़ करवाकर हमदर्दी व सहयोग प्राप्त कर सकें।

८ अक्तूबर, १९२७ ई को हुई जनरल एकत्रता के समय स. मंगल सिंघ एक बार फिर कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य चुने गए। १९२८ ई में मोती लाल नेहरू कमेटी में स. मंगल सिंघ सिक्खों के प्रतिनिधि के रूप में सदस्य थे। मार्च, १९२८ ई में हुई जनरल एकत्रता के समय स. मंगल सिंघ ने पंथ खालसा दीवान तथा गुरमुखी कोर्स के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया, जो प्रवान हो गया। १५ मार्च, १९२९ ई को स. मंगल सिंघ की तजवीज़ पर गुरमति प्रचार-प्रसार व लोक-कल्याणकारी कार्यों के लिए गुरमति प्रचार फंड, गुरुद्वारा सुधार सेवक सहायता फंड तथा जनरल फंड नाम के तीन फंड आरंभ किए गए। इस एकत्रता में ही स. मंगल सिंघ ने कृपाण पर लगी पाबंदी हटाने के लिए प्रस्ताव पेश किया। २६ अप्रैल, १९३० ई को स. मंगल सिंघ सिविल लाईन, लुधियाना से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के दोबारा सदस्य चुने गए। १९३० ई को महात्मा गांधी द्वारा शुरू की गयी सिविल न-फरमानी लहर में भी स. मंगल सिंघ ने सक्रियता से भाग लिया।

धड़ेबंदी एवं आपसी फूट के कारण, पंथक राजनीति से किनारा कर स. मंगल सिंघ १९३५ ई से १९४५ ई तक निरंतर केंद्रीय विधान सभा (लोक सभा) एवं इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी द्वारा सदस्य नामज़द होते रहे। १९४५ ई में स. मंगल सिंघ एक बार फिर शिरोमणि अकाली दल की तरफ से केंद्रीय विधान सभा के सदस्य चुने गए। इस बार ये योजना कमेटी के सदस्य भी नामज़द किए गए। सिक्ख-हितों को केंद्रीय स्तर पर पेश करने में स. मंगल सिंघ ने अहम योगदान डाला। १९६० ई से अस्वस्थ रहने के कारण स. मंगल सिंघ ने सक्रिय सिक्ख सियासत से सन्यास ले लिया। १६ जून, १९८२ ई को आप चंडीगढ़ में परलोक सिधार गए।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कार्यालय में सूचना कार्यालय खोला गया

श्री अमृतसर : ५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय श्री अमृतसर में कामकाज करवाने के लिए आने वाले लोगों की सुख-सुविधा को और भी आसान बनाने के लिए कार्यालय परिसर में नया सूचना कार्यालय खोला गया है। श्री हरिमंदर साहिब के अरदासिए सिंघ भाई राजदीप सिंघ द्वारा अरदास करने के उपरांत इस कार्यालय का रस्मी उद्घाटन जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने कर-कमलों से किया।

इस मौके पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विभागों में जब भी लोग कामकाज के लिए आते हैं तो उनको सम्बंधित कार्यालय में जाने के लिए बार-बार पूछना पड़ता है। इसको आसान करने के लिए मुख्य गेट के पास आधुनिक सुविधायों वाला नया सूचना कार्यालय कार-सेवा वाले महापुरुष बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले द्वारा बनवाया गया है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कार्यालय में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पूरा पता; किस विभाग में, कौन से कर्मचारी के पास जाना है आदि पूरा विवरण लिखित रूप में रखा जाएगा।

उन्होंने बाबा कशमीर सिंघ की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब भी कोई नयी इमारत बनाने सम्बंधी विनती की जाती है इनके द्वारा सहर्ष स्वीकार कर ली जाती है और ये बहुत जल्द इमारत तैयार करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हवाले कर देते हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही बाबा जी द्वारा गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल तथा श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा के मध्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब भवन का निर्माण शुरू किया जाएगा। बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले की तरफ से पहुंचे उनके प्रतिनिधि बाबा चमकौर सिंघ, बाबा गुरनाम सिंघ तथा आर्किटेक्ट स. इंदरबीर सिंघ को जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिरोपाउ देकर सम्मानित किया।

इस मौके पर स. सुरिंदरपाल सिंघ बद्धोवाल, सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, सचिव स. दलमेघ सिंघ, स. रूप सिंघ तथा स. सतबीर सिंघ के अलावा बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारीगण मौजूद थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने शहीद स. सतवंत सिंघ कालेका के परिवार को गोल्ड मैडल से सम्मानित किया

श्री अमृतसर : ८ जनवरी : अमेरिका के राज्य विसकानसिन के शहर ओक करीक के गुरुद्वारा साहिब मिलवाकी में गत वर्ष ५ अगस्त को हुए गोलीकांड के दौरान शहीद हुए स. सतवंत सिंघ कालेका की धर्म-पत्नी बीबी सतपाल कौर को गोल्ड मैडल तथा उनके सपुत्र स. प्रदीप सिंघ एवं स. अमरदीप सिंघ को शाल व सिरोपाउ देकर जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा

प्रबंधक कमेटी ने स्थानीय गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल में सम्मानित किया। इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब; सिंघ साहिब ज्ञानी बलवंत सिंघ नंदगढ़, जत्थेदार, तख़्त श्री दमदमा साहिब; सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ, मुख्य ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ (लुधियाना वाले), ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब तथा बाबा हरनाम सिंघ खालसा, मुखिया, दमदमी टकसाल भी हाज़िर थे।

सम्मान समारोह के अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि ५ अगस्त, २०१२ को अमेरिका के राज्य विसकानसिन के शहर ओक करीक के गुरुद्वारा साहिब में रोज़ाना की भांति नित्तनेम की बाणी के पाठ के उपरांत अरदास कर रही सिक्ख संगत पर नसली-भेदभाव के तहत एक सिरफिरे व्यक्ति द्वारा अंधाधुंध गोलियां चलाकर ७ सिक्ख श्रद्धालुओं को शहीद कर दिया था और २० से ज्यादा को ज़ख्मी कर दिया था। गुरु-घर में घटित इस गोलीकांड के दौरान बहुत-से श्रद्धालुओं की जानें बचाते हुए तथा अपनी जान की परवाह न करते हुए गुरुद्वारा साहिब के अध्यक्ष स. सतवंत सिंघ कालेका ने खुद को कुर्बान कर दिया था। इसी समय अपने फर्ज़ों की पूर्ति करते हुए अमेरिका के एक पुलिस अफ़सर लेफ्टीनेंट ब्रायन मरफी भी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सरदार कालेका के परिवार तथा उस पुलिस अफ़सर को गोल्ड मैडल से सम्मानित करने का फैसला किया गया था। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों के प्रति कुर्बानियां करने वालों का दिल से सम्मान करती है तथा शहीद स. सतवंत सिंघ कालेका की धर्म-पत्नी बीबी सतपाल कौर को गोल्ड मैडल से तथा उनके सपुत्र स. प्रदीप सिंघ व स. अमरदीप सिंघ; उनके भ्राता स. अमरजीत सिंघ, स. अंम्रितपाल सिंघ, स. हरबंस सिंघ कालेका; बहन प्रो: जसविंदर कौर (ढिल्लों), बीबी हरिंदर कौर रक्खड़ा को सिरोपाउ एवं शाल से सम्मानित करके गुरु-घर के अनन्य सेवकों के प्रति फ़ख्र महसूस करती है। उन्होंने कहा कि इस समय गोरे पुलिस अफ़सर लेफ्टीनेंट ब्रायन मरफी को भी सम्मानित किया जाना था, किंतु किसी कारणवश वे इस समारोह में नहीं पहुंच सके। उनको अमेरिका में समारोह आयोजित करके सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब गोल्ड मैडल से सम्मानित करेंगे।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब ने संगत को संबोधित करते हुए कहा कि स. सतवंत सिंघ कालेका ने अपनी जान की परवाह किए बिना बहुत सारे श्रद्धालुओं को सिरफिरे व्यक्ति की गोलियों से बचाया तथा गुरु-घर की मान-मर्यादा व सत्कार को मुख्य रखते हुए अद्वितीय शहादत दी, जो एक मिसाल है।

गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल में हुए सम्मान समारोह के अवसर पर हजूरी रागी भाई गुरकीरत सिंघ के जत्थे द्वारा अलाही बाणी के कीर्तन द्वारा संगत को निहाल किया गया तथा मंच की सेवा स. रूप सिंघ, सचिव द्वारा निभाई गई। इस मौके स. रजिंदर सिंघ महिता तथा स. गुरबचन सिंघ करमूंवाल, कार्यकारिणी सदस्य; स. सतबीर सिंघ सचिव; स. मनजीत सिंघ तथा स. महिंदर सिंघ अपर सचिव के अलावा बड़ी संख्या में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारी-कर्मचारीगण एवं संगत उपस्थित थी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०२-२०१३